

उप मुख्यमंत्री ने बोड़ला में 60 लाख रूपए के विकास कार्यों का किया भूमिपूजन

प्रशासनिक सुविधाओं और उच्च शिक्षा के विस्तार को मिलेगी मजबूती

उप मुख्यमंत्री ने 40 लाख रुपये के विकास कार्यों की घोषणा की, कॉलेज में स्मार्ट बोर्ड, इंटरनेट और एआई सुविधाओं के विस्तार की पहल

कवर्धा: बोड़ला में प्रशासनिक सुविधाओं के विस्तार और उच्च शिक्षा के लिए अधोसंरचना विकास को गति देते हुए उप मुख्यमंत्री व कवर्धा विधायक विजय शर्मा ने

आज 60 लाख रुपये के दो विकास कार्यों का भूमिपूजन किया। इसके तहत एसडीएम कार्यालय बोड़ला में 30 लाख रुपये की लागत से सभा कक्ष सह सामुदायिक शौचालय तथा शासकीय स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय में 30 लाख रुपये की लागत से अतिरिक्त कक्ष का निर्माण किया जाएगा। इस दौरान उन्होंने 40 लाख रुपये के विकास कार्यों की घोषणा की। इसमें कॉलेज में बाउंड्रीवॉल निर्माण के लिए 15 लाख रुपये, बालिका शौचालय निर्माण के लिए 4.60 लाख रुपये, ग्राम भीरा में मंगल भवन निर्माण के लिए 10 लाख रुपये तथा सीसी रोड निर्माण के लिए 10 लाख 40 हजार रुपये शामिल हैं। इसके साथ

ही कॉलेज में स्मार्ट बोर्ड, इंटरनेट सुविधा और एआई आधारित तकनीक उपलब्ध कराने की पहल की जाएगी।

उप मुख्यमंत्री ने विद्यार्थियों को आधुनिक शिक्षा, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), डिजिटल तकनीक और नवाचार के महत्व से अवगत कराते हुए कहा कि तकनीक का उपयोग ज्ञान बढ़ाने, क्षमताओं के विकास और भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार होने में करना चाहिए। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी तकनीक के स्वामी बनें, तकनीक उनकी स्वामी न बनें। चैटजीपीटी, जेमिनाई, ग्रेक और परस्पोक्सिटी जैसे एआई टूल्स का उपयोग पढ़ाई और रचनात्मक कार्यों



को बेहतर बनाने में किया जा सकता है। साथ ही विद्यार्थियों को अपने संस्कारों और मूल्यों को बनाए रखना चाहिए। उन्होंने बताया कि शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए विधानसभा क्षेत्र के 85 स्कूलों में स्मार्ट बोर्ड लगाने की योजना पर काम किया जा रहा है। इनमें 50 स्थानों पर स्मार्ट बोर्ड लगाए जा चुके हैं तथा शेष 35 स्थानों पर भी लगाए जाएंगे। छात्रावासों और महाविद्यालयों में भी डिजिटल सुविधाओं का विस्तार किया जाएगा। स्मार्ट बोर्ड के माध्यम से विज्ञान, गणित, भौतिकी और रसायन विज्ञान जैसे विषयों की जटिल अवधारणाओं को वीडियो और डिजिटल सामग्री से सरलता से

समझाया जा सकेगा। उप मुख्यमंत्री ने बताया कि विद्यार्थियों की काउंसलिंग और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए ऑनलाइन कोचिंग की सुविधा विकसित करने की दिशा में भी प्रयास किए जा रहे हैं। इसके तहत एनडीए, सीजीपीएससी, यूपीएससी, कर्मचारी चयन आयोग और नीट जैसी परीक्षाओं की तैयारी के लिए ऑनलाइन कक्षाएं संचालित करने का प्रयास किया जाएगा, ताकि विद्यार्थियों को उनके लक्ष्य के अनुरूप मार्गदर्शन मिल सके। उन्होंने विद्यार्थियों से नई तकनीक सीखने और उसका विवेकपूर्ण उपयोग करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि

शिक्षा, नवाचार और सकारात्मक सोच के साथ निरंतर प्रयास एवं अभ्यास से सफलता प्राप्त की जा सकती है। कार्यक्रम में पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष विदेशीराम धुर्वे, जनपद पंचायत अध्यक्ष बालका रामकिंकर वर्मा, नगर पंचायत बोड़ला अध्यक्ष विजय पाटिल, बरसाती लाल वर्मा, छोटाराम चंद्रवंशी, मोहन धुर्वे, जनपद पंचायत उपाध्यक्ष नंद श्रीवास, जिला पंचायत सदस्य ललिता रूपसिंग धुर्वे, जिला भाजपा प्रवक्ता कांशीराम उईके, नगर पंचायत उपाध्यक्ष लव निर्मलकर, राजेश साहू एवं अमित वर्मा, सरपंच रेशमा बाई सहित अन्य जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

अजीम प्रेमजी फउंडेशन की पहल से गणित हुआ आसान, पाढ़ी में बच्चों की प्रतिभा का प्रदर्शन

उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले बच्चे हुए सम्मानित

बलरामपुर (जनता के गोठ)
: बच्चों के मन से गणित का डर दूर करने और पढ़ाई को रोचक बनाने के उद्देश्य से ग्राम पंचायत पाढ़ी में शिक्षा विभाग एवं अजीम प्रेमजी फउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में संकुल स्तरीय गणित मेले का आयोजन किया गया। संकुल लुर्गी के अंतर्गत आयोजित इस मेले में पांच विद्यालयों के सैकड़ों विद्यार्थियों ने हिस्सा लेकर अपनी प्रतिभा और रचनात्मक सोच का प्रदर्शन किया।

मॉडलों से समझाए गणित के कठिन सिद्धांत

मेले में विद्यार्थियों ने जोड़, घटाव, गुणा, भाग, भिन्न, दशमलव, ज्यामितीय आकृतियों, क्षेत्रफल और परिमाप जैसे विषयों को आकर्षक मॉडल एवं चार्ट के माध्यम से सरल और रोचक अंदाज में प्रस्तुत किया। बच्चों की प्रस्तुतियों ने दिखाया कि सही मार्गदर्शन और गतिविधि आधारित शिक्षा से गणित जैसे विषय को भी सहज बनाया जा सकता है। अतिथियों ने विद्यार्थियों के प्रयासों की सराहना की।

गणित का डर दूर करना उद्देश्य



कार्यक्रम में खंड शिक्षा अधिकारी ने कहा कि गणित का कठिन विषय समझने की धारणा दूर करना जरूरी है। गणित हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा है और ऐसे आयोजन बच्चों को खेल-खेल में सीखने का अवसर देते हैं। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में अजीम प्रेमजी फउंडेशन के सहयोग की सराहना की।

ग्राम पंचायत पाढ़ी के सरपंच ने कहा कि गांव में इस तरह का शैक्षणिक आयोजन होना गर्व की बात है। ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों में भी अपार प्रतिभा है, जिसे उचित

अवसर और मार्गदर्शन देकर निखारा जा सकता है। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में पंचायत की ओर से सहयोग जारी रखने की बात कही।

उत्कृष्ट मॉडल वाले विद्यार्थी पुरस्कृत

मेले के समापन पर उत्कृष्ट गणितीय मॉडल प्रस्तुत करने वाले विद्यार्थियों को अतिथियों ने पुरस्कृत किया। इस अवसर पर संकुल समन्वयक, विभिन्न विद्यालयों के प्रधानपाठक, शिक्षक और बड़ी संख्या में ग्रामीणजन उपस्थित रहे। शिक्षकों के संचालन में कार्यक्रम शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुआ।

पूर्व मंत्री का आरोप— एसआईआर के बाद 24.99 लाख मतदाताओं के नाम सूची से हटाए गए, निर्वाचन आयोग की निष्पक्षता पर उठाए सवाल

कवर्धा। छत्तीसगढ़ के पूर्व मंत्री एवं वरिष्ठ कांग्रेस नेता मोहम्मद अकबर ने विशेष गहन पुनरीक्षण (स्ट्रुक्चर) के दौरान मतदाता सूची से बड़ी संख्या में नाम हटाए जाने पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने निर्वाचन आयोग से शिफ्टेड (स्थानांतरित) और एब्सेंट (अनुपस्थित) श्रेणी में दर्ज मतदाताओं के नाम सार्वजनिक करने की मांग की है। अकबर ने कहा कि देश में भारत निर्वाचन

आयोग है, न कि भारत सरकार निर्वाचन आयोग। उन्होंने आयोग की स्वतंत्रता और निष्पक्षता को लोकतंत्र के लिए महत्वपूर्ण बताते हुए केंद्र और राज्य सरकारों की भूमिका पर भी सवाल उठाए।

मोहम्मद अकबर ने कहा कि जब निर्वाचन आयोग की निष्पक्षता और संवैधानिक भूमिका पर सवाल उठते हैं, तो आयोग की ओर से जवाब देने के बजाय सरकार के प्रतिनिधि सामने क्यों आते हैं? उनके मुताबिक, निर्वाचन आयोग एक स्वतंत्र संवैधानिक संस्था है और उसकी कार्यप्रणाली में पारदर्शिता बनी रहनी चाहिए। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ में एसआईआर प्रक्रिया के दौरान बड़ी संख्या में मतदाताओं के नाम हटाए



जाने का मामला गंभीर चिंता का विषय है। चुनावी अंतर से चार गुना अधिक नाम हटाने का दावा पूर्व मंत्री ने अपने बयान में वर्ष 2023 के विधानसभा चुनाव का उल्लेख करते हुए कहा कि भाजपा और कांग्रेस के बीच कुल मत्ों का अंतर

गन्ना बोनस बढ़ने पर किसानों ने उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा का किया स्वागत-अभिनंदन



ब्लॉक अध्यक्ष पंकज वर्मा तथा किसान विनोद वर्मा, महेश वर्मा, टीकाराम साहू, तुलश धुर्वे, प्रदुम वर्मा और रामपुत्र वर्मा ने उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा के प्रति आभार जताया।

कवर्धा, गन्ने की खरीदी अब 425 रुपए प्रति क्विंटल की दर से किए जाने का निर्णय से उत्साहित किसानों ने आज बोड़ला स्थित सर्किट हाउस में उप मुख्यमंत्री एवं कवर्धा विधायक विजय शर्मा का स्वागत-अभिनंदन किया। किसानों ने उन्हें गन्ना भेंट कर इस पहल के लिए बधाई दी और अपनी खुशी जाहिर की। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में राज्य सरकार के इस निर्णय से प्रदेश के कुल 31,022 गन्ना विक्रेता किसानों को लगभग 51.09 करोड़ रुपए की बोनस राशि प्राप्त होगी। उल्लेखनीय है कि बोनस गणना का आधार बढ़ने से किसानों को 95.95 रुपये प्रति क्विंटल की दर से बोनस मिलेगा। इस निर्णय से गन्ना उत्पादक किसानों को आर्थिक संबल मिलेगा तथा खेती की लागत वहन करने और आगामी फसल की तैयारी में सहायता मिलेगी। इस अवसर पर भारतीय किसान संघ, कवर्धा के जिला उपाध्यक्ष दिनेश चंद्रवंशी, बोड़ला

5वीं क्लास के छात्र ने उठाया खौफ्राक कदम , फांसी लगाकर दी जान ,परिजनों का रो - रोकर बुरा हाल , जांच में जुटी पुलिस

अंचल वर्मा - दुर्ग, उत्तई। जनता के गोठ। दुर्ग/ भिलाई। छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के भिलाई से आत्महत्या का सनसनीखेज मामला सामने आया है। जहां पांचवीं कक्षा में पढ़ने वाले एक छात्र की आत्महत्या कर ली है। कुरुद इलाके में रहने वाले मनीष देवांगन ने फांसी लगाकर खुदकुशी की है। घटना जामुल थाना क्षेत्र के नवीन चौक के पास की है। सूचना मिलने के बाद पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। शुरुआती जांचकारों के मुताबिक, कुछ दिन पहले परिवार में बड़े पिता के अस्थि विसर्जन में जाने को लेकर बात हुई थी। बताया जा रहा है कि मनीष को वहां जाने से मना कर दिया गया था। अब इस बात को घटना से जोड़कर देखा जा रहा है। हालांकि, छात्र ने यह कदम क्यों उठाया, इसकी अभी



पुष्टि नहीं हुई है। घटना की जानकारी मिलने के बाद जामुल थाना पुलिस ने मामले की जांच शुरू की। पुलिस परिजनों से पृष्ठताछ कर रही है और घटना से जुड़े सभी पहलुओं की जानकारी जुटा रही है। जांच में यह पता लगाने की कोशिश की जा रही है कि घटना से पहले छात्र किन परिस्थितियों से गुजर रहा था। पुलिस ने फ्लिहाल खुदकुशी के पीछे किसी खास वजह की पुष्टि नहीं की है। अस्थि विसर्जन में नहीं जाने देने की बात अहता निर्माण कराया जा रहा है। शिकायतकर्ताओं का कहना है कि संबंधित भूमि शासकीय है और बाजार के उपयोग के लिए है। ऐसे

डांडकरवा के 11 नंबर बाजार की जमीन पर अतिक्रमण का आरोप, ग्रामीणों ने उठाई आवाज

जाहिर अंसारी प्रतापपुर। ग्राम पंचायत डांडकरवा के 11 नंबर बाजार की शासकीय भूमि पर कथित अतिक्रमण का मामला सामने आया है। इसे लेकर ग्रामीणों ने शिवभजन सिंह मरावी की अगुवाई में अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व), प्रतापपुर को ज्ञापन सौंपकर जांच और कार्रवाई की मांग की है। ग्रामीणों द्वारा सौंपे गए ज्ञापन के अनुसार, डांडकरवा के 11 नंबर बाजार स्थित खसरा नंबर 1390, 1392 और 1393 सहित अन्य भूमि के कुछ हिस्सों पर राजेंद्र नामक शिक्षक द्वारा कथित रूप से अहता निर्माण कराया जा रहा है। शिकायतकर्ताओं का कहना है कि संबंधित भूमि शासकीय है और बाजार के उपयोग के लिए है। ऐसे



में निजी निर्माण से सार्वजनिक उपयोग की जमीन प्रभावित होने की आशंका है। ग्रामीणों ने प्रशासन से मांग की है कि संबंधित भूमि के राजस्व अभिलेखों की जांच कर वास्तविक स्थिति स्पष्ट की जाए। यदि जांच में शासकीय भूमि पर अवैध कब्जे या निर्माण की पुष्टि होती है, तो नियमानुसार कार्रवाई

हथबंद में धूमधाम से मनाया गया टी.एस. कंवर का जन्मदिन, फल-मिठाई का किया वितरण

जनता के गोठ/ओंकार साहू बलौदाबाजार। छत्तीसगढ़ मीडिया एसोसिएशन के प्रदेश संरक्षक टी.एस. कंवर का जन्मदिन मंगलवार को हथबंद स्थित ठाकुर देव मंदिर में धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर छत्तीसगढ़ मीडिया एसोसिएशन की मिमगा तहसील के पदाधिकारियों ने केक काटकर एवं मिठाई, केला, सेब सहित विभिन्न फलों का वितरण कर जन्मदिन की खुशियां साझा कीं। उपस्थित पदाधिकारियों ने टी.एस. कंवर के स्वस्थ, सुखमय एवं दीर्घायु जीवन की कामना की।

कार्यक्रम में संगठन के संरक्षक रामेश्वर जांगड़े, उपाध्यक्ष दिलीप वर्मा, सचिव ओंकार साहू, सह सचिव कृष्णा कुंजाम,जनपद सदस्य



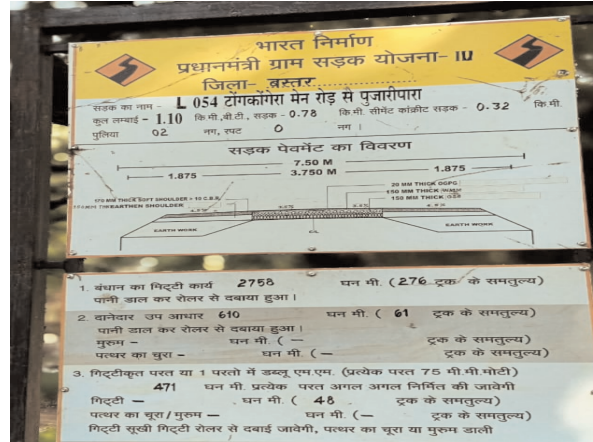
सभापति प्रतिनिधि ऋषिकांत बबलू पटेल, मंडल उपाध्यक्ष धनेश्वर 'धन्ना' निषाद सहित बाबूनाम निषाद (पुजारी), सेवक ध्रुव, राकेश

नि षा द , बाबूलाल, हीर निषाद एवं सुरेंद्र कोसले उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान सभी ने आपसी सौहार्द और संगाठनात्मक एकजुटता के साथ जन्मदिन का उत्सव म ना य ा । पदाधिकारियों ने टी.एस. कंवर के प्रति शुभकामनाएं व्यक्त करते हुए संगठन की मजबूती और सामाजिक समरसता के लिए मिलकर कार्य करने का संकल्प जताया।

1.12 करोड़ की सड़क अधूरी, ग्रामीणों की बड़ी परेशानी

तोंगकोगेरा में पीएमजीएसवाई सड़क निर्माण अधूरा छोड़ने का आरोप, ग्रामीणों ने जांच और जल्द काम पूरा कराने की उठाई मांग

भुजबल बघेल बकावंड जनता के गोठ।। विकासखंड बकावंड की ग्राम पंचायत तोंगकोगेरा में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (पीएमजीएसवाई) के तहत मेन रोड से पुजारी परात तक 1 करोड़ 12 लाख 40 हजार रुपये की लागत से सड़क निर्माण कराया जा रहा है। लेकिन निर्माण कार्य अधूरा होने के कारण ग्रामीणों को आवागमन में परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीणों ने संबंधित विभाग से जल्द निर्माण कार्य पूरा कराने की मांग की है। ग्रामीणों के अनुसार, सड़क निर्माण की जिम्मेदारी ठेकेदार विनोद कुमार जैन को सौंपी गई है। ग्रामीणों का आरोप है कि ठेकेदार ने निर्माण कार्य अधूरा छोड़ दिया है। सड़क की खुदाई होने और निर्माण पूरा नहीं होने से लोगों को आने-



जाने में दिक्कत हो रही है। बारिश के दौरान कीचड़ और फिसलन के कारण स्थिति और भी कठिन हो जाती है।

विभागीय निगरानी पर भी उठे सवाल

ग्रामीणों का आरोप है कि निर्माण कार्य की निगरानी करने वाले विभागीय अधिकारी नियमित रूप से मौके पर निरीक्षण नहीं कर रहे हैं। शिकायतों के बावजूद समस्या का समाधान नहीं होने से ग्रामीणों में नाराजगी बढ़ रही है। उनका कहना है कि सड़क निर्माण के लिए बड़ी राशि स्वीकृत होने के

बावजूद उन्हें सुगम आवागमन की सुविधा नहीं मिल पा रही है।

जांच कर जिम्मेदारी तय करने की मांग

ग्रामीणों ने जिला प्रशासन और पीएमजीएसवाई विभाग से सड़क निर्माण कार्य की गुणवत्ता एवं प्रगति की जांच कराने, जिम्मेदारों की जवाबदेही तय करने और अधूरे निर्माण को शीघ्र पूरा कराने की मांग की है। अब देखना होगा कि संबंधित विभाग इस मामले में कब तक संज्ञान लेकर कार्रवाई करता है और ग्रामीणों को राहत दिलाने के लिए क्या कदम उठाता है।

बलरामपुर जिला अस्पताल में प्रभार की कुर्सी पर घमासान! शासन का आदेश 25 दिन से बेअसर?

डॉ. रामप्रसाद तिकी को अब तक नहीं मिला सिविल सर्जन का प्रभार, करीब 150 कर्मचारियों ने कलेक्टर से लगाई गुहार

बलरामपुर (जनता के गोठ)
: शासन का आदेश जारी हो, नई पदस्थापना तय हो जाए, लेकिन 25 दिन से अधिक समय गुजरने के बाद भी प्रभार हस्तांतरण नहीं हो- तो सवाल उठना लाजिमी है। जिला चिकित्सालय बलरामपुर में सिविल सर्जन सह मुख्य अस्पताल अधीक्षक के प्रभार को लेकर ऐसा ही मामला सामने आया है। शासन के 17 सितंबर 2026 के स्थानांतरण आदेश के बावजूद नवनियुक्त सिविल सर्जन डॉ. रामप्रसाद तिकी को विधिवत प्रभार नहीं सौंपे जाने का आरोप है। मामले को लेकर जिला अस्पताल के करीब 150 कर्मचारियों ने कलेक्टर को आवेदन सौंपकर तत्काल हस्तक्षेप की मांग की है।

आदेश शासन का, फिर अमल में देरी क्यों?

छत्तीसगढ़ शासन के लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग के आदेश के अनुसार डॉ. रामप्रसाद तिकी को जिला चिकित्सालय बलरामपुर के सिविल सर्जन सह मुख्य अस्पताल अधीक्षक की जिम्मेदारी सौंपी गई है। वहीं, पूर्व पदस्थ अधिकारी डॉ.



शशांक गुप्ता को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र राजपुर में पदस्थ किया गया है। लेकिन कर्मचारियों के आवेदन के मुताबिक, आदेश जारी होने के 25 दिन से अधिक समय बाद भी प्रभार हस्तांतरण पूरा नहीं हुआ है।

अब सबसे बड़ा सवाल यही है कि जब शासन ने पदस्थापना का आदेश जारी कर दिया, तो उसका पालन सुनिश्चित कराने की जिम्मेदारी किसकी है? आखिर प्रभार हस्तांतरण में ऐसी कौन-सी

अड़चन है, जिसके कारण मामला अब तक लंबित है?

150 कर्मचारियों की आवाज, प्रशासन से जवाबदेही की मांग

प्रभार हस्तांतरण में देरी को लेकर जिला चिकित्सालय के करीब 150 कर्मचारियों ने कलेक्टर से हस्तक्षेप की मांग की है। आवेदन में कहा गया है कि समस्त प्रशासनिक एवं वित्तीय दस्तावेजों, अभिलेखों और संबंधित दायित्वों के साथ प्रभार

तत्काल नवनियुक्त सिविल सर्जन को सौंपा जाए। कर्मचारियों ने केवल प्रभार दिलाने की मांग नहीं की, बल्कि देरी के कारणों की जांच कर नियमानुसार कार्रवाई करने और भविष्य में शासन के आदेशों का समयबद्ध पालन सुनिश्चित कराने की भी मांग उठाई है।

जिला अस्पताल में प्रशासनिक व्यवस्था पर सवाल

जिला चिकित्सालय जैसे महत्वपूर्ण संस्थान में शीर्ष प्रशासनिक पद के प्रभार को लेकर

लंबे समय तक अर्निश्चितता बनी रहना गंभीर प्रशासनिक सवाल खड़े करता है। अस्पताल के कामकाज में स्पष्ट जिम्मेदारी और जवाबदेही बेहद जरूरी है। ऐसे में प्रभार हस्तांतरण में देरी के कारणों को स्पष्ट करना और व्यवस्था को सुचारु बनाए रखना जिला प्रशासन की प्राथमिकता होनी चाहिए।

अब कलेक्टर की बारी— कार्रवाई होगी या फइलों में उलझेगा मामला?

करीब 150 कर्मचारियों की गुहार के बाद अब निगाहें कलेक्टर के रुख पर टिकी हैं। क्या शासन के आदेश का तत्काल पालन कराया जाएगा? क्या प्रभार हस्तांतरण में देरी की जिम्मेदारी तय होगी? या फिर यह मामला भी सरकारी फइलों में उलझकर रह जाएगा? सबसे बड़ा सवाल यही है—जब शासन का आदेश ही समय पर लागू नहीं होगा, तो प्रशासनिक जवाबदेही कैसे तय होगी? फ्लिहाल, कर्मचारियों के आवेदन पर जिला प्रशासन की आधिकारिक प्रतिक्रिया सामने आना बाकी है। अब देखना होगा कि इस मामले में कितनी जल्दी कार्रवाई होती है।

संपादकीय

दिल्ली के लोक निर्माण विभाग के मंत्री प्रवेश वर्मा द्वारा हाल में तिलक नगर इलाके में सड़क निरीक्षण के दौरान एक व्यक्ति को थपड़ मारने की घटना ने कई गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। क्या किसी मंत्री से इस तरह के व्यवहार की उम्मीद की जा सकती है?लोकतंत्र में एक अच्छे जनप्रतिनिधि की पहचान उसके स्वभाव, कार्यशैली और जनता के प्रति

जवाबदेही से होती है। आदर्श नेता वही होता है, जिसके कार्यों एवं निर्णयों में निष्पक्षता, पारदर्शिता और स्पष्टता हो। वह पूरी ईमानदारी के साथ अपने कर्तव्यों का पालन करे और उसमें अपनी आलोचना सुनने का साहस हो। मगर जब सरकार में मंत्रिपद पर आसीन कोई जनप्रतिनिधि सार्वजनिक स्थल पर आपा खो दे और जनता से दुर्व्यवहार करने लगे, तो उसे

किस तरह देखा जाएगा।दिल्ली के लोक निर्माण विभाग के मंत्री प्रवेश वर्मा द्वारा हाल में तिलक नगर इलाके में सड़क निरीक्षण के दौरान एक व्यक्ति को थपड़ मारने की घटना ने कई गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। क्या किसी मंत्री से इस तरह के व्यवहार की उम्मीद की जा सकती है? यह घटना उस धारणा के बिल्कूल विपरीत है, जिसमें उच्च पद पर बैठे जनप्रतिनिधि के

व्यवहार को समाज में मिसाल के तौर पर देखा जाता है। असहमति, आलोचना या विरोध लोकतांत्रिक व्यवस्था का हिस्सा है। ऐसी स्थिति में संयम और पद की गरिमा का खयाल रखा जाना बेहद जरूरी है।गौरतलब है कि बीते रविवार को आप विधायक जरनैल सिंह ने मंत्री प्रवेश वर्मा की मौजूदगी में सड़क की सतह का कुछ हिस्सा उखाड़कर मरम्मत कार्य की

गुणवत्ता पर सवाल उठाया था। आरोप है कि इस दौरान मंत्री ने घटना का वीडियो बना रहे एक व्यक्ति को थपड़ मार दिया। उनका दावा है कि संबंधित व्यक्ति ने उनके परिवार के बारे में अपशब्द कहे।इस घटना से जुड़े आरोप-प्रत्यारोप जांच का विषय है, लेकिन सवाल है कि क्या मंत्री की हिंसक प्रतिक्रिया को उचित ठहराया जा सकता है? अगर उनके साथ कोई

दुर्व्यवहार हुआ, तो संबंधित व्यक्ति के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जा सकती थी। सड़क की गुणवत्ता हो या किसी अन्य सार्वजनिक समस्या का सवाल, उसका समाधान उग्र व्यवहार से नहीं, बल्कि तर्क, जांच और कानून के दायरे में ही हो सकता है।सार्वजनिक जीवन में पद से अधिक महत्वपूर्ण उसकी गरिमा और मर्यादा होती है।

सबसे दुखद यह है कि समाज में सहानुभूति, दयाभाव, विनम्रता और क्षमा जैसे शब्द महज डिक्शनरी या किताबों में कैद होकर रह गये लगते हैं। अब शेष बचा है आपस में ईर्ष्या, द्वेष, जलन और एक दूसरे को नीचा या निरीह समझना। कोई व्यक्ति सड़क पर या कहीं ओर घायल होकर चाहे मरणासन्न हालत में पड़ा हो वहां से गुजरने वाले या तो वीडियो रील बनाते दिखाई देते हैं या सिर्फ तमाशबीन। मदद के लिए उठने वाले हाथ या अपनी लज्जरी चमचमाती कार रोककर घायल को हास्पिटल पहुंचाने वाले परोपकारी अपवाद स्वरूप ही हैं। जैसा यह काम उनका नहीं बल्कि पुलिस, एंबुलेंस या डायल 112 के जिम्मे ही है, उन्हें क्या लेना- देना। आजकल जहां देखो भीड़भाड़ बढ़ रही है। सोशियोलॉजी कहती है किसी भी व्यक्ति का अकेले या समूह में और भीड़ में व्यवहार अलग- अलग होता है। इसे ही भीड़ व्यवहार कहा जाता है। इस भीड़ का नेतृत्व या अगुआई किन हाथों में है, इसी पर निर्भर होता है कि भीड़ क्या करने वाली है।

आरबी त्रिपाठी
आजकल जिसे देखो वह बहुत जल्दी में दिखाई देता है। अपने चारों ओर प्रायः रोजाना ही आप खुद देखते तथा महसूस करते होंगे कि लोग खासकर युवा जेन – जी कहलाने वाले, अथेडू उम्र के महिला-पुरुष, युवक- युवतियां बड़े अधीर, बैचैन, असहज, बेसब्र और धैर्यविहीन देखे जाते हैं। हां अपवाद स्वरूप ही सही उम्रदराज सीनियर सिटीजन जरूर शांत, सुकून, धैर्यवान रहकर जीवन जीवन जीते दिखाई देते हैं। यह समस्या सरसरी तौर पर तो थोड़ी सामाजिक, आर्थिक तथा ऊहापोह भरी व्यस्त जीवन शैली और खान-पान से जुड़ी हुई है जिसका उपचार हरेक को अपने भीतर ही तलाशना होगा। चिकित्सा क्षेत्र में तो इसे थोड़ा इंजाइटी, ओवर थ्रिंकिंग या पारिवारिक तथा मानसिक समस्या करार दिया जाता है। यहां हम इसके सभी पहलुओं को सामने ला रहे हैं।

अपने आस-पास सर्वाधिक जल्दबाजी, अधीरता, बैचैनी और एक तरह का उतावलापन देखने में आता है सड़कों, चौराहों, ट्राफिक सिग्नल पर जहां हर कोई जल्दी में, ओवरटेक की होड़, वाहनों के ठीक आगे दायें बायें कट मारकर आगे निकलता दिखाई देता है। खासकर ट्रू व्हीलर, बाइक्स, ऑटो तथा कुकुर मुत्तों की तरह उग आये ईरिक्सा सहित कई तरह के छोटे बड़े वाहन ट्राफिक को सुचारू चलने बाधक बनते हैं। ऑनलाइन खाने की चीजें और वस्तुएं घरों के द्वार तक पहुंचाने वालों की भूमिका भी ट्राफिक को बिगाड़ने में कम नहीं है। सो, सड़कों प्रमुख चौराहों पर बढ़ते ट्राफिक के अनुपात में यातायात और पुलिस कर्मियों की कमी भी स्पष्ट दिखाई देती है। हालांकि जनसंख्या और शहरीकरण के बढ़ते दबाव के चलते हरेक जगह इनकी मौजूदगी संभव भी नहीं होती। सो, लोगों को अपनी सुरक्षा का स्वयं ध्यान रखना होगा।

इस सब में ट्राफिक नियमों का ईमानदारी से पालन करने वालों के समक्ष ज्यादा दिक्कतें पेश आती है। ट्राफिक नियम तोड़ने वाले ना तो चालानी कार्रवाई से उरते हैं ना ही पुलिस कर्मियों से। सो, आये दिन ऐसे दृश्य देखने में आते हैं जहां व्यर्थ की बहस या किसी नजदीकी ‘भैया’ से मोबाइल पर बात कराने या अन्य संपर्कों का हवाला देकर किसी तरह छूटने और कार्रवाई से बचकर निकलने की जुगाड़ जमाते लोग नजर आते हैं। भले ही ये कर्मी किसी भैया से बात करना नहीं चाहते हों। तस्वीर का दूसरा रूप यह भी



है कि अधिकांश चौराहों पर जहां ट्राफिक सिग्नल हो ना हो वहां तैनात कर्मी आपस में बात करते या मोबाइल पर व्यस्त दिखाई देते हैं। भोपाल में तो कुछ समय पहले ऐसे कर्मियों पर कार्रवाई भी की गई है। हाल ही में पहले प्रदेश के बड़े शहर इंदौर और भोपाल की कुछ घटनाओं का जिक्र समीचीन होगा जिसमें कवर्ड कैम्पस में घुसने पर रोकने वाले सुरक्षा गार्ड को कार चालक ने कथित तौर पर कुचलकर मार डाला। अनेक शहरों में ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं उदाहरण के रूप में सामने है। भोपाल में रिटायर्ड आईएएस की निर्मम हत्या का आरोपी अभी तक पुलिस के हत्थे नहीं लग पाया। कई जगह सीनियर सिटीजन के साथ आस-पास के पड़ोसी दुर्व्यवहार कर धमकियां देते हैं लेकिन ऐसा करने वाले बैखोफ घुमते रहते हैं। इंदौर के राजवाड़ा इलाके में एक बस ने दो तीन लोगों को रौंद डाला तो राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में बाइक सवार युवती को कार चालक ने ऐसे

टक्कर मारी कि वो बहुत दूर तक घिसटती रही और घायल हुई। गनीमत है उसने हैलमेट पहना था। सो, ऐसी घटनाएं रोजाना ही घटती रहती है जिसे ज्यादातर लोग अखबार के पन्ने की तरह पलटकर भुला देते हैं।

सबसे दुखद यह है कि समाज में सहानुभूति, दयाभाव, विनम्रता और क्षमा जैसे शब्द महज डिक्शनरी या किताबों में कैद होकर रह गये लगते हैं। अब शेष बचा है आपस में ईर्ष्या, द्वेष, जलन और एक दूसरे को नीचा या निरीह समझना। कोई व्यक्ति सड़क पर या कहीं ओर घायल होकर चाहे मरणासन्न हालत में पड़ा हो वहां से गुजरने वाले या तो वीडियो रील बनाते दिखाई देते हैं या सिर्फ तमाशबीन। मदद के लिए उठने वाले हाथ या अपनी लज्जरी चमचमाती कार रोककर घायल को हास्पिटल पहुंचाने वाले परोपकारी अपवाद स्वरूप ही हैं। जैसे यह काम उनका नहीं बल्कि पुलिस, एंबुलेंस या डायल 112 के जिम्मे ही है, उन्हें क्या लेना- देना।

आजकल जहां देखो भीड़भाड़ बढ़ रही है। सोशियोलॉजी कहती है किसी भी व्यक्ति का अकेले या समूह में और भीड़ में व्यवहार अलग-अलग होता है। इसे ही भीड़ व्यवहार कहा जाता है। इस भीड़ का नेतृत्व या अगुआई किन हाथों में है, इसी पर निर्भर होता है कि भीड़ क्या करने वाली है। इन दिनों राष्ट्रीय राजधानी से लेकर अधिकांश प्रदेशों में आंदोलनों, प्रदर्शनों, जुलूसों, सामगाम में भीड़ जुट रही है। कहीं कहीं भीड़ कानून अपने हाथों में ले लेती है या कानून का उल्लंघन करती है यही भीड़ व्यवहार है। जब भीड़ अनियंत्रित होकर व्यवहार करती है तो व्यवस्था को अप्रिय कदम उठाना पड़ता है। आखिर सुरक्षा कर्मी भी मनुष्य ही हैं जिन्हें अपने बड़े ऑफिसर्स के हुक्म की तामील करनी ही पड़ती है। समाज शास्त्र में इस अवधारणा की विशद व्याख्या की गई है।

उधर पॉलिटिकल साइंस में प्रेशर ग्रुप को लेकर कहा गया है कि यह कोई राजनीतिक दल नहीं होता बल्कि ऐसा समूह होता है जो व्यवस्था के कामकाज पर नजर रखकर व्यापक रूप से जो लोगों के हित में हो उसे करने या उपयुक्त ना हो उसका प्रतिरोध करता है।

दिल्ली के जंतर-मंतर सहित देश के विभिन्न स्थानों पर हो रहे आंदोलन, प्रदर्शन इसी श्रेणी में आते हैं। राजनीतिक दलों का प्रतिरोध या आंदोलन, उनके अपने उद्देश्यों को हासिल करने को लेकर होते हैं यह कहा जा सकता है। सोचें, यदि प्रेशर ग्रुप अपना दायित्व ना निभायें तो अनेक मामलों का खुलासा शायद ही हो सकेगा। जेन- जी, अल्फा- जेन, सुप्रीम कोर्ट सहित अन्य वकीलों के प्रदर्शन, कई यूट्यूबर, तथा इम्फ्लुएण्शर और स्वतंत्र मीडिया से जुड़े लोग भी प्रेशर ग्रुप की तरह ही काम कर रहे हैं। आगे आने वाले वक्त में इसके क्या नतीजे होंगे यह समय के हाथों है।

क्या असहमति का जवाब हिंसा हो सकता है?

पंकज तिवारी

ई.वी. हैवेल जिनका योगदान भारतीय कला को अंग्रेजी मानसिकता से मुक्त कराने के क्षेत्र में महत्वपूर्ण रहा, बीसवीं शताब्दी के शुरूआत में जब भारतीय युवा कलाकार विदेशी शैली, विषयवस्तु की तरफ आसानी से फिसलते जा रहे थे उस समय उन कलाकारों को भारतीय कला थाती के प्रति जगा कर उन्हें भारतीय थाती के बल पर आगे बढ़ने को प्रोत्साहित कर भारतीय कला जगत के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करी थी, जिसकी गिनती उस समय के महत्वपूर्ण कार्यों में होती है लेकिन रवि वर्मा पर उनकी भी नजर कुछ टेढ़ी ही थी, वर्मा जी पर भारतीय काव्य की मूल भावना से हटने का आरोप लगाया है हैवेल साहब ने। हो सकता है उनके निगाह में उनको अपनी बातें सही प्रतीत लगती हो पर इस बात पर बहस के पहले उनके कुछ चित्रों पर गौर करने की जरूरत सी महसूस हो रही है चित्र ‘शकुन्तला का अपने प्रिय को देखना’ देश में तैल रंग के शुरूआत का दौर, शुरूआत में ही बिना प्रशिक्षण के ही इतना मनभावन संयोजन, केश, वस्त्र, रंग, एनॉटॉमी और भावों का आपसी संतुलित सामंजस्य। बहाना पर से कांटा निकालने का और निगाह पीछे तनिक दूरी पे किसी के ऊपर, एकटक, आँखें उम्मीद की सागर सी जान पड़ती हैं। क्या विवाह के पूर्व राम और सीता के एक-दूसरे को निहारने को लेकर जो काव्य रचे गये हैं, से कम का भाव आँका जा सकता है इस चित्र में, पुष्टभूमि में सहयोगी जल, जमीन, जंगल खुद ही कविता कहने में सक्षम है। हालांकि कहना नहीं चाहिए लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि हैवेल के इस कथन के पीछे उनके बंगाल स्कूल और वास पद्धति के प्रति प्रेम का असर है। हो सकता है कि इस आलेख में भी कुछ लोगों को मेरे नजरिए में वर्मा जी के प्रति नेह का असर झलके पर कोई संदेह नहीं कि हमेशा हर परिस्थितियों पर चर्चा होनी चाहिए इसलिए आगे भी कोई इस पर कुछ रचे तो उसके भी नेह को जरूर देखा जाना चाहिए। भाव की ही बात हरिश्चंद्र और तारामती नामक चित्र में भी खूब दर्शित है। तारामती की व्यथित आँखों को देखकर करुण रस से युक्त पूरा ग्रंथ लिखा जा सकता है। दुःखी शकुन्तला चित्र में भी मुख पर वेदना जैसे सब कुछ छो जाने का भान अनायास ही दीख पड़ता है।

क्या हम मान सकते हैं कि मौलिकता को दिखाना कला नहीं है? क्या यह सच है? ऐसे ही तमाम प्रश्न उठाए गए थे राजा रवि वर्मा को लेकर। उनकी कृतियाँएं धार्मिक है, उनके कृतियों में किस्सा हुआ करता था, उनके कृतियों में संस्कार हुआ करता था और पुरुष के बीच पूर्ण समानता। तच्चा के रंग (नस्ल) के आधार पर होने वाली असमानता के विरुद्ध संघर्ष। जाति और जन्म आधारित ऊंच-नीच का अंत। आर्थिक गैर-बराबरी (अमीरी-गरीबी की खाई) को पाटना। व्यक्तिगत जीवन में विदेशी हस्तक्षेप को रोकना और निजी स्वतंत्रता की रक्षा करना। दुनिया के सभी राष्ट्रों के बीच असमानता के खिलाफ संघर्ष। अस्त्र-शस्त्र (हिंसा) के खिलाफ सत्याग्रह। अपनी प्रारंभिक शिक्षा पूरी करने के बाद डॉ. लोहिया उच्च शिक्षा के लिए जर्मनी गए, जहां उन्होंने बर्लिन विश्वविद्यालय से ‘नमक सत्याग्रह’ विषय पर अपना शोध पत्र लिखा, जिसके आधार पर उन्हें 1932 में पीएचडी (डॉक्टरेट) की उपाधि प्राप्त हुई। वे हिंदी के अतिरिक्त अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच सहित कई भाषाओं के प्रकांड ज्ञाता थे। बहुत कम उम्र में ही आजादी के आंदोलन से जुड़ गए थे और 1936 में कांग्रेस पार्टी के भीतर गठित ‘परराष्ट्र विभाग’ के पहले सचिव बनाए गए थे। वे सत्ता के विकेंद्रीकरण के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने शासन को लोकतांत्रिक ढंग से चलाने के लिए ‘चौखंबा राज्य व्यवस्था’ का मॉडल देश के सामने रखा, जिसमें सत्ता के चार स्तंभ— गांव, मंडल (जिल्ला), प्रांत और केंद्र

था, उनके कृतियों में संस्कृति हुआ करती थी, उनके कृतियों में समाज हुआ करता था, उनके कृतियों के दर्शक हुआ करते थे उनकी कृतियाँ लोगों के जेहन में उतर गई थीं। बस समस्या यह थी कि उनकी कृतियाँ यथार्थ के धरातल पर थीं फलतः कला में उनके कद को लेकर विवाद हमेशा व्याप्त रहा। जीते जी भी उन्हें कई विवादों से गुजरना पड़ा कोर्ट तक के चक्कर लगाने पड़े और अपना वकील भी खुद ही बनना पड़ा हालांकि तार्किक क्षमता के बल पर जीत भी हासिल हुई। विवाद तब भी था विवाद आज भी है। प्रसंशक तब भी थे प्रसंशक आज भी हैं तब रविंद्र नाथ टैगोर के भतीजे बालेंद्र नाथ टैगोर के जैसे उनके कृतियों के प्रसंशक हुआ करते थे और आज....

25 वर्षीय युवा बिना किसी प्रशिक्षण के वियना के चित्र प्रदर्शनी में स्वर्ण पदक प्राप्त करता है। लोगों की निगाह यहीं से इनकी तरफ को मुड़ती है। इसे एक संयोग ही कहा जा सकता है कि 1872 में चेन्नई में पहली प्रदर्शनी करने वाले वर्मा जी की कृति वियना में 1873 में अपने पहचान के साथ आगे बढ़ी और ठीक 20 साल बाद 1893 में शिकागो में आयोजित वर्ल्ड कोलंबियन एग्जीबिशन में स्वामी विवेकानंद के अग्रह पर भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए अपने लगभग 10 चित्र प्रदर्शित करते हैं इस प्रदर्शनी की गिनती 19वीं शताब्दी की भव्यतम अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शिनियों में होती है। रवि वर्मा को पुरस्कृत भी किया गया। 20 वर्षीय संयोग के बाद शतकीय संयोग भी बना और 1993 में उनके चित्रों की एक भव्य प्रदर्शनी राष्ट्रीय संग्रहालय दिल्ली में हुई। प्रदर्शनी के बाद विरोध भी हुआ खुले तौर पर विरोध हुआ आधुनिक भारतीय कलाकार जो उस समय सक्रिय थे, में कुछ खुद को प्रमुख मानने वाले कलाकार राजा रवि वर्मा के इस प्रदर्शनी को लेकर कुछ ज्यादा ही विचलित थे। ‘ऐसे कलाकार जिनका कला में कोई योगदान ही ना हो’ को इस तरह प्रमोट करने से भारतीय कला को भला क्या फायदा पहुंच सकता है? जैसे बातों को कहने वालों के बावजूद इनकी प्रदर्शनी हुई और सराही भी गई। राजा रवि वर्मा के चित्र लोगों के जेहन में आज भी जस के तस बरकरार है। प्रसिद्ध कला समीक्षक शेरमान ली की बात— ‘कोई भी महान कला या धर्म जनसाधारण की समझ के परे नहीं होती और वह यदि ऐसी नहीं है तो वह असफल है’ मतलब वर्मा की कला महान भी है और सफल भी कारण जनसाधारण के समझ में है। उनकी एक कृति 2007 में करीब सवा आठ करोड़ में बिकी, यही महानता उनकी सदा बनी रहे।

12 अक्टूबर : डॉ. राम मनोहर लोहिया जी की पुण्यतिथि

देश विभाजन के साथ मिली आजादी से दुखी थे डॉ. लोहिया

डॉ. राम मनोहर लोहिया केवल एक चिंतक ही नहीं बल्कि एक सच्चे कर्मवीर भी थे। उन्होंने देश में अनेक सामाजिक, लोकतांत्रिक और राजनीतिक आंदोलनों का कुशल नेतृत्व किया। वर्ष 1942 के %भारत छोड़ो आंदोलन% के समय उन्होंने ब्रिटिश सरकार की नजरों से बचकर, उषा मेहता के साथ मिलकर भूमिगत रहकर गुप्त रेडियो स्टेशन (कांग्रेस रेडियो) चलाया था, जिसने अंग्रेज हुकूमत की नाक में दम कर दिया था। इसके बाद 18 जून 1946 को उन्होंने गोवा को पुर्तगालियों के आधिपत्य से मुक्ति दिलाने के लिए एक बड़ा जन-आंदोलन शुरू किया। इसके साथ ही उन्होंने स्वतंत्र भारत में %अंग्रेजी हटाओ% आंदोलन की भी कमान संभाली।

सांवरमल अग्रवाल

डॉ. राम मनोहर लोहिया केवल खोखले भाषणों पर विश्वास नहीं करते थे। वे «रोजी-रोटी कपड़ा दो, वरना गाड़ी छोड़ दो», «अंग्रेजी हटाओ» और पिछड़ों, दलितों तथा महिलाओं के लिए 60व आश्रक्षण की पुरजोर कवालत करने वाले नेता थे। वे भारत के महान स्वतंत्रता सेनानी, प्रखर राष्ट्रवादी चिंतक और एक ऐसे अद्वितीय राजनेता थे, जिन्होंने भारतीय राजनीति में सामाजिक न्याय और समानता की नई नींव रखी थी। लोहिया जी पहली बार 1963 में उत्तर प्रदेश की फर्रुखाबाद लोकसभा सीट के उपचुनाव में विजयी होकर लोकसभा पहुंचे थे। इसके बाद 1967 के आम चुनाव में भी वे फर्रुखाबाद सीट से ही दोबारा सांसद चुने गए। इसी वर्ष 12 अक्टूबर 1967 को नई दिल्ली में उनका निधन हो गया था। उनका जन्म 23 मार्च 1910 को उत्तर प्रदेश के अकबरपुर में एक मारवाड़ी वैश्य परिवार में हुआ था, लेकिन वे प्रारंभ से ही जातिवाद की संकीर्ण सीमाओं को तोड़ने के पक्षधर थे। वे छुआछूत के घोर विरोधी थे और स्वयं को किसी एक जाति के दायरे में बांधकर नहीं रखना चाहते थे। उनके विचार, कर्म और कार्य पद्धति पूरी तरह से मानवीय समानता पर आधारित थे। देश के विभाजन के आधार पर मिली आजादी से वे अत्यंत दुखी थे, इसी कारण उन्होंने जवाहरलाल नेहरू की कांग्रेस से अपना रास्ता हमेशा के



लिए अलग कर लिया था।

डॉ. राम मनोहर लोहिया केवल एक चिंतक ही नहीं बल्कि एक सच्चे कर्मवीर भी थे। उन्होंने देश में अनेक सामाजिक, लोकतांत्रिक और राजनीतिक आंदोलनों का कुशल नेतृत्व किया। वर्ष 1942 के %भारत छोड़ो आंदोलन% के समय उन्होंने ब्रिटिश सरकार की नजरों से बचकर, उषा मेहता के साथ मिलकर भूमिगत रहकर गुप्त रेडियो स्टेशन (कांग्रेस रेडियो) चलाया था, जिसने अंग्रेज हुकूमत की नाक में दम कर दिया था। इसके बाद 18 जून 1946 को उन्होंने गोवा को पुर्तगालियों के आधिपत्य से मुक्ति दिलाने के लिए एक बड़ा जन-आंदोलन शुरू किया। इसके साथ ही उन्होंने स्वतंत्र भारत में %अंग्रेजी हटाओ% आंदोलन की भी कमान संभाली।

डॉ. लोहिया एक ऐसे राजनेता थे जो राजनीति में उच्च नैतिक मूल्यों और शुचिता के पक्षधर थे। वे राजनीति की गंदी गलियों में भी शुद्ध आचरण की कवालत करते थे। वे सिद्धांतों के इतने पक्के थे कि जब उनकी अपनी ही पार्टी (प्रजा सोशलिस्ट पार्टी) की सहभागिता वाली राज्य सरकार के प्रशासनिक कार्यकाल में आंदोलनकारियों पर गो़लियां चलाई गईं, तो उन्होंने अपनी ही पार्टी के मुख्यमंत्री से तुरंत इस्तीफे की मांग कर दी थी। वे कहते थे कि भारत की राजनीति में तब तक सफाई और शुद्धता नहीं आ सकती, जब तक किसी पार्टी के गलत कार्यों की निंदा उसी दल के कार्यकर्ताओं और समर्थकों द्वारा न की जाए। लोहिया जी ने गर्व से कहा था— «मुझे यह कहने का पूरा हक है कि हम ही भारत में एक मात्र ऐसी राजनीतिक पार्टी हैं, जिसने अपनी ही सरकार की गलत नीतियों की निंदा की। सिर्फ निंदा ही नहीं की, बल्कि उसे इस कदर मजबूर किया कि अंततः उस व्यवस्था में बदलाव लाना पड़ा।»

डॉ. राम मनोहर लोहिया पूंजीवाद और साम्यवाद दोनों ही चरम विचारधाराओं के कड़े आलोचक थे। उन्होंने इन दोनों के विकल्प के रूप में एक तीसरी विचारधारा— वे मानवीय मूल्यों पर आधारित लोकतांत्रिक समाजवाद का प्रतिपादन किया था। समाज से हर प्रकार की असमानता को समूल नष्ट करने के लिए उन्होंने %सस क्रांति% (सात क्रांतियों) का दर्शन दिया,

जिसके मुख्य बिंदु निम्नलिखित थे—

स्त्री और पुरुष के बीच पूर्ण समानता। तच्चा के रंग (नस्ल) के आधार पर होने वाली असमानता के विरुद्ध संघर्ष।

जाति और जन्म आधारित ऊंच-नीच का अंत।

आर्थिक गैर-बराबरी (अमीरी-गरीबी की खाई) को पाटना।

व्यक्तिगत जीवन में विदेशी हस्तक्षेप को रोकना और निजी स्वतंत्रता की रक्षा करना। दुनिया के सभी राष्ट्रों के बीच असमानता के खिलाफ संघर्ष।

अस्त्र-शस्त्र (हिंसा) के खिलाफ सत्याग्रह।

अपनी प्रारंभिक शिक्षा पूरी करने के बाद डॉ. लोहिया उच्च शिक्षा के लिए जर्मनी गए, जहां उन्होंने बर्लिन विश्वविद्यालय से ‘नमक सत्याग्रह’ विषय पर अपना शोध पत्र लिखा, जिसके आधार पर उन्हें 1932 में पीएचडी (डॉक्टरेट) की उपाधि प्राप्त हुई। वे हिंदी के अतिरिक्त अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच सहित कई भाषाओं के प्रकांड ज्ञाता थे। बहुत कम उम्र में ही आजादी के आंदोलन से जुड़ गए थे और 1936 में कांग्रेस पार्टी के भीतर गठित ‘परराष्ट्र विभाग’ के पहले सचिव बनाए गए थे। वे सत्ता के विकेंद्रीकरण के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने शासन को लोकतांत्रिक ढंग से चलाने के लिए ‘चौखंबा राज्य व्यवस्था’ का मॉडल देश के सामने रखा, जिसमें सत्ता के चार स्तंभ— गांव, मंडल (जिल्ला), प्रांत और केंद्र

शामिल थे। उनका मानना था कि इन चारों स्तरों पर शक्ति के समान विभाजन के बिना वास्तविक लोकसत्ता मजबूत नहीं हो सकती।

डॉ. लोहिया मौलिक रूप से एक ठेठ देशी चिंतक थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद की राजनीति में वे एक ऐसे विचारक थे जो इतिहास, संस्कृति और अपनी भाषा के संदर्भ में पश्चिम के सिद्धांतों को उधार लेकर व्याख्या करने को कतई राजी नहीं थे। 60 के दशक में देश में उनके द्वारा शुरू किया गया %अंग्रेजी हटाओ आंदोलन% देश के गिने-चुने आंदोलनों में से एक है। उनके लिए भाषा केवल राजनीति का मुद्दा नहीं, बल्कि राष्ट्र के स्वाधिमान का प्रश्न और करोड़ों देशवासियों के भीतर आत्मविश्वास जगाने का जरिया थी। वे अक्सर कहते थे कि हिंदुस्तान के साधारण लोग अंग्रेजी न जानने पर लज्जित न हों बल्कि गर्व करें, क्योंकि यह सामंती भाषा है। वे चाहते थे कि भारतीय मानस आत्मा से पूरी तरह भारतीय बने, न कि अंग्रेज।

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में लोहिया जी कई बार जेल गए और वहां ब्रिटिश हुकूमत की अमानवीय यातनाएं भी सहें। आजादी से पहले कांग्रेस के भीतर उनका एक प्रभावशाली सोशलिस्ट गुट था। 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजों से मुक्ति मिलने पर वे उत्साहित तो थे, लेकिन विभाजन की भारी कीमत पर मिली इस स्वतंत्रता के कारण वे गहरे अवसाद में थे।

स्कूल बस हादसे के बाद एक्शन में कबीरधाम पुलिस, ओवरलोडिंग करने वाले तीन स्कूली वाहनों पर कार्रवाई

रेंगाखार में क्षमता से अधिक बच्चों को बैठाकर ले जाने वाले वाहनों पर 7,500 रुपये का जुर्माना, पुलिस ने दी सख्त चेतावनी

कवर्धा। पंडरिया थाना क्षेत्र में स्कूली बस पलटने से 10 से अधिक बच्चों के घायल होने की घटना के बाद कबीरधाम पुलिस स्कूली वाहनों की सुरक्षा को लेकर एक्शन में आ गई है। बच्चों की सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित करने के लिए पुलिस ने नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहन चालकों के खिलाफ कार्रवाई तेज कर दी है। इसी कड़ी में रेंगाखार थाना क्षेत्र में निर्धारित क्षमता से अधिक स्कूली बच्चों को बैठाकर ले जाने वाले तीन वाहनों के खिलाफ मोटरयान अधिनियम के तहत चालानी कार्रवाई की गई। पुलिस ने तीनों वाहन चालकों पर कुल 7,500 रुपये का जुर्माना लगाया है।



संबंधित वाहन चालकों पर कार्रवाई की गई।

कार्रवाई के तहत पहले वाहन पर 2,400 रुपये, दूसरे पर 2,700 रुपये और तीसरे वाहन पर

2,400 रुपये का जुर्माना लगाया गया। इस तरह कुल 7,500 रुपये की चालानी कार्रवाई की गई।

बच्चों की सुरक्षा से समझौता नहीं

कबीरधाम पुलिस ने स्पष्ट किया है कि स्कूली बच्चों की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है। निर्धारित क्षमता से अधिक बच्चों को वाहन में बैठाकर ले जाने से दुर्घटना की स्थिति में गंभीर खतरा पैदा हो सकता है। ऐसे में वाहन चालकों को नियमों का पालन करते हुए सुरक्षित परिवहन सुनिश्चित करना होगा। लापरवाही बरतने वालों के खिलाफ आगे भी कार्रवाई जारी रहेगी।

पुलिस ने अभिभावकों से भी अपील की है कि वे बच्चों को स्कूल लाने-ले जाने वाले वाहनों की स्थिति, निर्धारित क्षमता और सुरक्षा मानकों पर ध्यान दें। क्षमता से अधिक बच्चों को बैठाने वाले वाहनों में बच्चों को भेजने से बचें तथा नियमों का उल्लंघन दिखाई देने पर संबंधित विभाग या पुलिस को सूचना दें।

बी.एड. प्रथम सेमेस्टर के नवप्रवेशित विद्यार्थियों के लिए इंडक्शन प्रोग्राम का आयोजन

अंचल वर्मा – दुर्ग, उत्तरई **जनता के गोठ।**

दुर्ग/ उत्तरई - प्रिज्म स्कूल ऑफ एजुकेशन में बी.एड. प्रथम सेमेस्टर के नवप्रवेशित विद्यार्थियों के लिए इंडक्शन प्रोग्राम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ माँ सरस्वती के पूजन , माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। कार्यक्रम में महाविद्यालय की डायरेक्टर ख्याति साहू , डायरेक्टर असीम साहू , प्राचार्य डॉ. अंजना अन्य विभाग के प्राचार्य डॉ. सीमा कश्यप , ललित साहू , डॉ. दुर्गा त्रिपाठी की गरिमामयी उपस्थिति रही। महाविद्यालय के डायरेक्टर ख्याति साहू ने संबोधित करते हुए शिक्षक शिक्षा के महत्व, अनुशासन, नैतिक मूल्यों एवं एक आदर्श शिक्षक के दायित्वों के बारे में मार्गदर्शन प्रदान किया। डायरेक्टर असीम साहू ने «शिक्षा का उद्देश्य केवल सफल बनाना नहीं, बल्कि जीवन को सार्थक, आनंदमय और खुशहाल बनाना है।»पर अपना विचार दिया। प्राचार्य डॉ.अंजना ने



नवप्रवेशित विद्यार्थियों को महाविद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियों, नियमों, पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-प्रशिक्षण की प्रक्रिया से परिचित कराया। कार्यक्रम के दौरान बी.एड. प्रथम सेमेस्टर के नवप्रवेशित विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक अपना परिचय दिया तथा अपनी शैक्षणिक पृष्ठभूमि, रुचियों एवं भविष्य के लक्ष्यों को साझा किया। तथा बी.एड. तृतीय सेमेस्टर के विद्यार्थियों ने भी अपने शैक्षणिक अनुभव नवप्रवेशित विद्यार्थियों के साथ साझा किए। कार्यक्रम का कुशल मंच संचालन बी.एड. तृतीय सेमेस्टर की छात्रा

अनामिका जेना द्वारा किया गया। कार्यक्रम के अंत में प्राध्यापिका लीना वैष्णव द्वारा आभार प्रदर्शन किया गया तथा सभी अतिथियों, प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कार्यक्रम का समापन किया। और आज के गरिमामय कार्यक्रम में महाविद्यालय की उर्रिष्ठ प्राध्यापकगण रेखा नामदेव, मीनाक्षी देवी, सुष्मा साहू, भाग्यश्री की गरिमामयी उपस्थिति रही। सभी प्राध्यापकों ने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए उन्हें उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ एवं मार्गदर्शन प्रदान किया।



जनता के गोठ/ओंकार साहू बलौदाबाजार। नगर पालिका परिषद सिमगा के एल्डरमैन पारस पाटकर ने सामाजिक सहयोग और शिक्षा के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए पटवा समाज सिमगा को 15 कुर्सियां तथा शंकर नगर प्राथमिक शाला को 4 कुर्सियां भेंट कीं। इस पहल का उद्देश्य समाज की बैठक व्यवस्था को सुविधाजनक बनाने के साथ विद्यालय की आवश्यकताओं में सहयोग प्रदान करना है। एल्डरमैन पारस पाटकर द्वारा पटवा समाज को प्रदान की गई 15 कुर्सियों से सामाजिक बैठकों एवं अन्य सामुदायिक गतिविधियों में सुविधा मिलेगी। वहीं शंकर नगर प्राथमिक शाला में 4 कुर्सियां प्रदान कर विद्यालय की व्यवस्था में सहयोग किया गया। इस दौरान प्रधान पाठक संतोष शर्मा को कुर्सियां सौंपी गईं। इस अवसर पर पटवा समाज के अध्यक्ष एवं एल्डरमैन पारस पाटकर, उपाध्यक्ष दिनेश पाटकर, समाज के सदस्य सूरज सामदेव, बिट्टू काटकर, पुरत पाटकर सहित समाज के अन्य सामाजिक जन उपस्थित रहे।

रामानुजगंज में नो-एंट्री तोड़ने वालों पर पुलिस का शिकंजा, 21 मामलों में 39,200 का चालान



बलरामपुर (जनता के गोठ)

: नो-एंट्री नियमों की अनदेखी करने वाले वाहन चालकों के खिलाफ यातायात पुलिस ने सख्त कार्रवाई की है। विशेष चेकिंग अभियान के दौरान नो-एंट्री उल्लंघन के 15 मामलों समेत कुल 21 प्रकरणों में कार्रवाई कर 39,200 रुपये का शमन शुल्क लगाया गया।

पुलिस अधीक्षक वैभव बैंकर के निर्देशन एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विश्व दीपक त्रिपाठी के मार्गदर्शन में यातायात प्रधारी

विमलेश देवांगन के नेतृत्व में अभियान चलाया गया। पुलिस ने वाहन चालकों को यातायात नियमों का पालन करने और निर्धारित मार्गों व प्रतिबंधित समय का सम्मान करने की हिदायत दी। यातायात विभाग ने हेलमेट, सीट बेल्ट और निर्धारित गति सीमा का पालन करने की अपील करते हुए स्पष्ट किया कि नियमों का पालन चालान से बचने के लिए ही नहीं, बल्कि सड़क पर अपनी और दूसरों की जान सुरक्षित रखने के लिए भी जरूरी है।

एनएच-343 की ऊंचाई से पस्ता के श्री राम मंदिर की भव्यता पर संकट, 4 करोड़ की लागत से बन रहा है मंदिर

बलरामपुर (जनता के गोठ)

: बलरामपुर जिले के ग्राम पस्ता में सड़क निर्माण का एक मामला धार्मिक आस्था से टकरा गया है। एनएच -343 सड़क का निर्माण कार्य मंदिर के सामने अत्यधिक ऊंचा किए जाने से ग्रामीणों और मंदिर समिति में भारी आक्रोश है।

मामला ग्राम पस्ता स्थित श्री राम मंदिर परिसर का है, जहां लगभग 4 करोड़ रुपये की लागत से भव्य श्री राम मंदिर का निर्माण कराया जा रहा है। मंदिर निर्माण अंतिम चरण में है और यह क्षेत्र के लोगों की आस्था का बड़ा केंद्र बनने जा रहा है। लेकिन ठीक मंदिर के सामने से गुजर रही नेशनल हाईवे 343 को ठेकेदार द्वारा जमीन से कई फीट ऊंचा बना दिया गया है।

मंदिर की भव्यता खत्म होने का आरोप –



मंदिर समिति के लोगों का कहना है कि सड़क ऊंची होने से पस्ता का मंदिर परिसर गड्डे में चला गया है। सड़क से मंदिर का मुख्य द्वार ढंक गया है और मंदिर की भव्यता पूरी तरह से खत्म हो रही है। भविष्य में बारिश के दौरान मंदिर परिसर में पानी भरने की भी आशंका है।

कलेक्टर और सांसद को पहले ही सौंपा ज्ञापन, अब तक

नहीं हुई सुनवाई –

इसी मामले को लेकर ग्राम पस्ता की मंदिर समिति द्वारा पहले ही कलेक्टर और सांसद को ज्ञापन सौंपा जा चुका है, लेकिन अब तक इस पर कोई इशारे और निर्माण कार्य उसी ऊंचाई पर जारी है। इससे समिति के लोगों में और अधिक नाराजगी है। समिति के पदाधिकारियों ने दो टूक कहा है कि यदि प्रशासन ने इस पर जल्द ध्यान नहीं दिया और सड़क की ऊंचाई कम नहीं की गई तो ग्राम पस्ता के ग्रामीण उग्र आंदोलन करने को बाध्य होंगे, जिसकी पूरी जिम्मेदारी प्रशासन की होगी।

बाइक से शराब तस्करी, 9 लीटर अंग्रेजी शराब के साथ दो आरोपी गिरफ्तार

बलरामपुर (जनता के गोठ)

: जिले में अवैध शराब की तस्करी के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के बीच रघुनाथनगर पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए बाइक से शराब ले जा रहे दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने उनके कब्जे से 9 लीटर अंग्रेजी शराब और परिवहन में इस्तेमाल की जा रही मोटरसाइकिल जब्त की है। दोनों आरोपियों को न्यायिक रिमांड पर भेज दिया गया है।

पुलिस के अनुसार, पुलिस अधीक्षक के मार्गदर्शन एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में अवैध गतिविधियों के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है। इसी क्रम में थाना रघुनाथनगर पुलिस गिरवानी चौक पर वाहन जांच कर रही थी। इसी कीमत की प्लेटिना मोटरसाइकिल क्रमांक सी जी 30 बी 7099 को रोककर



जांच की गई। बाइक पर पीछे बैठा व्यक्ति सफेद प्लास्टिक थैले में शराब रखे हुए था।

जांच के दौरान थैले से अंग्रेजी दबंग गोल्ड शराब के 45 पाउंच बरामद हुए। प्रत्येक पाउंच में 200 मिलीलीटर शराब थी। जब शराब की कुल मात्रा 9 लीटर और कीमत 4,050 रुपये आंकी गई। पुलिस ने 30 हजार रुपये कीमत की मोटरसाइकिल भी जब्त की है।

आबकारी एक्ट के तहत

मामला दर्ज

पुलिस ने आरोपियों की पहचान कतवारी राम कोरवा, निवासी ग्राम पंडरी और राजकुमार कोखा, निवासी ग्राम खुस्सी, थाना प्रतापपुर के रूप में की है। दोनों के खिलाफ थाना रघुनाथनगर में अपराध क्रमांक 118/2026 के तहत आबकारी अधिनियम की धारा 34(2) में मामला दर्ज किया गया। विधिवत गिरफ्तारी के बाद दोनों को न्यायिक रिमांड पर भेज दिया गया।

कोयले की चमक के बीच धूल में घुट रही जनता की जिंदगी, जवाबदेही किसकी ?

एसईसीएल भटगांव क्षेत्र में जर्जर सड़कें और धूल-धक्कड़ से जनजीवन अस्त-व्यस्त, अधिकारियों की सुविधाओं के बीच आम नागरिकों की सुरक्षा और स्वास्थ्य पर उठे गंभीर सवाल

जाह्नद अंसारी
सूरजपुर/भटगांव:-- एसईसीएल भटगांव क्षेत्र में बड़े पैमाने पर कोयला उत्पादन और परिवहन की गतिविधियां जारी हैं, लेकिन इसके आसपास रहने वाले लोगों की परेशानियां कम होने का नाम नहीं ले रही हैं। कहीं जर्जर सड़कें आवागमन में बाधा बन रही हैं, तो कहीं सड़क पर बिखरी गिट्टी और उड़ती धूल लोगों का जीवन मुश्किल बना रही है। दोपहिया वाहन चालकों से लेकर पैदल राहगीरों तक को रोजाना इन समस्याओं के बीच सफ़र करना पड़ रहा है। ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यही है कि जब कोयला उत्पादन लगातार जारी है, तो प्रभावित क्षेत्र की जनता को सुरक्षित और स्वच्छ वातावरण उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी आखिर कौन निभाएगा?

कोयला उत्पादन और परिवहन से जुड़ी गतिविधियों के बीच स्थानीय नागरिकों की समस्याएं व्यवस्था की प्राथमिकताओं पर सवाल खड़े कर रही हैं। एक और क्षेत्र में कोयले का बड़े पैमाने पर

उत्पादन हो रहा है, वहीं दूसरी ओर नागरिकों को जर्जर सड़कों, धूल और बिखरी गिट्टी के बीच आवागमन करना पड़ रहा है। स्थानीय लोगों के लिए यह स्थिति केवल असुविधा का विषय नहीं, बल्कि रोजमर्रा की जिंदगी से जुड़ी गंभीर समस्या है।

अधिकारियों के सुविधाजनक वाहनों में क्षेत्र का निरीक्षण करने और आम नागरिकों के उसी मार्ग पर धूल-धक्कड़ के बीच गुजरने की स्थिति के बीच अंतर साफ़ दिखाई देता है। ऐसे में सवाल उठना स्वाभाविक है कि प्रभावित क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाओं को बेहतर बनाने और नागरिकों की समस्याओं का स्थायी समाधान करने के लिए अब तक क्या ठोस कदम उठाए गए हैं?

भटगांव क्षेत्र में कोयला परिवहन में लगे भारी वाहनों की खराब स्थिति राहगीरों की परेशानी बढ़ा सकती है। गड्ढों और बिखरी गिट्टी के कारण दोपहिया वाहन चालकों को विशेष सावधानी बरतनी पड़ती है। वहीं, भारी वाहनों

की आवाजाही के दौरान यातायात सुरक्षा सुनिश्चित करना भी आवश्यक है। निर्धारित गति सीमा का पालन, वाहनों में आवश्यक सुरक्षा उपकरणों की जांच और यातायात नियमों का प्रभावी क्रियान्वयन जरूरी है। संबंधित अधिकारियों को यह स्पष्ट करना चाहिए कि भारी वाहनों की गति पर निगरानी किस प्रकार की जा रही है और नियमों के उल्लंघन की स्थिति में क्या कार्रवाई की जाती है।

सड़क पर उड़ती धूल का असर केवल आवागमन करने वालों तक सीमित नहीं है। सड़क किनारे दुकान चलाने वाले व्यापारियों को भी इसका सामना करना पड़ता है। दुकानों में रखा सामान धूल से प्रभावित होता है और ग्राहकों को भी परेशानी झेलनी पड़ती है। लंबे समय तक धूल के संपर्क में रहने से स्वास्थ्य संबंधी जोखिम बढ़ सकते हैं। ऐसे में इस समस्या को केवल सड़क की सफ़ाई तक सीमित मानना उचित नहीं होगा। क्षेत्र में वायु गुणवत्ता की जांच करवाकर प्रदूषण की वास्तविक स्थिति सामने लाना और आवश्यकतानुसार सड़क



संबंधी आकलन कराना जरूरी है, ताकि समस्या के समाधान के लिए ठोस और प्रभावी कदम उठाए जा सकें।

कोयला परिवहन से प्रभावित सड़कों पर धूल और गंदगी को नियंत्रित करने के लिए नियमित सफ़ाई, आवश्यकतानुसार पानी का छिड़काव, क्षतिग्रस्त मार्गों की मरम्मत और सड़क पर कोयले के बिखराव को रोकने जैसे उपाय प्रभावी ढंग से लागू किए जाने चाहिए। परिवहन के दौरान कोयले को सुरक्षित ढक्कर ले जाना भी आवश्यक है, ताकि सड़क पर कोयला गिरने और धूल फैलने की

समस्या को कम किया जा सके। इन उपायों की नियमित निगरानी और जिम्मेदार अधिकारियों की जवाबदेही सुनिश्चित करना भी उठाना ही महत्वपूर्ण है। केवल व्यवस्था होने का दावा पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसका जमीन पर प्रभाव दिखाई देना चाहिए।

यह मुद्दा किसी एक परिवहन कंपनी को निशाना बनाने का नहीं, बल्कि कोयला उत्पादन और परिवहन से प्रभावित क्षेत्र में बुनियादी सुविधाओं तथा नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने का है। ऐसे में एसईसीएल भटगांव क्षेत्र प्रबंधन और संबंधित अधिकारियों

को स्पष्ट करना चाहिए कि प्रभावित सड़कों की मरम्मत के लिए क्या कार्ययोजना तैयार की गई है, धूल और सड़क पर बिखरे कोयले को नियंत्रित करने के लिए क्या नियमित व्यवस्था है और भारी वाहनों की गति तथा सुरक्षा मानकों की जांच कितनी नियमितता से की जाती है। साथ ही, स्थानीय नागरिकों की शिकायतों के समाधान के लिए कौन जिम्मेदार है और स्थायी सुधार के लिए क्या समयसीमा तय की गई है? इन सवालों का जवाब और जमीन पर दिखाई देने वाली कार्रवाई ही यह स्पष्ट कर सकेगी कि स्थानीय जनता

की समस्याओं को कितनी गंभीरता से लिया जा रहा है।

कोयला उत्पादन देश की ऊर्जा जरूरतों और अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है, लेकिन विकास की प्रक्रिया में स्थानीय नागरिकों की सुरक्षा, स्वास्थ्य और जीवन की गुणवत्ता को अनदेखी नहीं की जा सकती। उत्पादन और परिवहन के आंकड़ों के साथ-साथ प्रभावित क्षेत्रों में सुरक्षित सड़कें, स्वच्छ वातावरण और बेहतर बुनियादी सुविधाएं सुनिश्चित करना भी जरूरी है। स्थानीय नागरिकों की अपेक्षा है कि जर्जर सड़कों की मरम्मत कराई जाए, धूल नियंत्रण के उपाय प्रभावी

की समस्याओं को कितनी गंभीरता से लिया जा रहा है।

कोयला उत्पादन देश के विकास में योगदान दे सकता है, लेकिन स्थानीय जनता की परेशानियों को नजरअंदाज करके विकास की तस्वीर पूरी नहीं हो सकती। अब जरूरत आक्षसनों की नहीं, बल्कि जवाबदेही तय करने और परेशान पर ठोस सुधार दिखाई देने की है।

संक्षिप्त

समाचार

रूस की लैब में कर्मचारी की मौत से उठे सवाल

5500 नमूनों की जांच के बाद भी सस्पेंस बरकरार, डब्ल्यूएचओ ने मांगी और जानकारी

न्यूयार्क ,एजेंसी। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कहा है कि प्लेग और अन्य बीमारियों संबंधी शोध पर ध्यान केंद्रित करने वाली रूस की प्रयोगशाला में कार्यरत एक युवा कर्मचारी की मौत का कारण अब भी पता नहीं चल पाया है। संयुक्त राष्ट्र की स्वास्थ्य एजेंसी ने शुरुआती अपुष्ट खबरों का हवाला देते हुए कहा कि कर्मचारी की मौत संभवतः न्यूमोनिक प्लेग से हुई। यह एक गंभीर बीमारी है, जिसके मामले मध्य युग में ब्लैक डेथ महामारी से जुड़े ब्यूबोनिक प्लेग की तुलना में कम पाए जाते हैं। न्यूमोनिक प्लेग एक



व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है और इससे गंभीर निमोनिया हो सकता है लेकिन समय पर बीमारी का पता चलने और उपचार मिलने पर मरीज के ठीक होने की संभावना अधिक होती है। डब्ल्यूएचओ ने इस महीने की शुरुआत में मामला सामने आने के बाद डिजीज आउटब्रेक न्यूज के तहत जारी अपनी पहली विस्तृत रिपोर्ट में मामले की जांच जारी रखने का आह्वान किया है। संगठन

ने कहा कि रूस के स्वास्थ्य अधिकारियों ने 5,500 से अधिक नमूनों की जांच की हैं, लेकिन इनमें किसी खतरनाक रोगजनक सूक्ष्मजीव की मौजूदगी का कोई प्रमाण नहीं मिला। डब्ल्यूएचओ ने कहा, स्थिति का अधिक

सटीक आकलन करने के लिए चिकित्सकीय जांच, महामारी विज्ञान और प्रयोगशाला से जुड़ी अतिरिक्त जानकारी की जरूरत है। साथ ही, यह पुष्टि होना भी जरूरी है कि प्रयोगशाला में कार्यरत कर्मचारी की मौत किस बीमारी से हुई थी। डब्ल्यूएचओ ने एक कथित दूसरे मामले का भी उल्लेख किया है। संगठन ने इससे पहले एसोसिएटेड प्रेस को ईमेल के जरिए बताया था कि दूसरे मामले की जानकारी ब्रिटेन और सर्बिया के दो समाचार पत्रों से मिली थी। इन समाचार पत्रों ने रूस की कुछ खबरों का हवाला दिया था, लेकिन उनके स्रोत स्पष्ट नहीं थे। रूस ने ऐसे किसी दूसरे मामले से इनकार किया है।

गंभीर बीमारियों के बजाय लाइफस्टाइल पर ज्यादा ध्यान दे रहे इन्फ्लुएंसरस

अल्बानी, एजेंसी। सोशल मीडिया पर हेल्थ और वेलनेस इन्फ्लुएंसरस के पोस्ट को लेकर प्यूरिसर्च सेंटर ने एक बड़ा अध्ययन किया है। इंटरनेट पर



स्वास्थ्य संबंधी सलाह देने वाले लोग (इन्फ्लुएंसरस) ज्यादातर गंभीर बीमारियों या डॉक्टरों द्वारा बताए गए लाइफस्टाइल (सजावट, फिटनेस और खान-पान) को बेहतर बनाने पर ज्यादा पोस्ट करते हैं। इसके साथ ही, उनका एक बहुत बड़ा मकसद अपने फॉलोअर्स को कोई न कोई सामान या सप्लीमेंट बेचना भी होता है। हर 100 में से लगभग 38 पोस्ट में किसी ब्रांड का प्रचार, सप्लीमेंट्स या कोई सर्विस बेचने की कोशिश होती है। लगभग सभी इन्फ्लुएंसरस कभी न कभी ऐसा जरूर करते हैं।

7.7 तीव्रता के भूकंप में भी शराब की टेंशन

जान बचाने के बजाए बोटलें संभालते दिखे 3 शख्स

पनामा सिटी, एजेंसी। पनामा में शक्तिशाली भूकंप के दौरान दुकान के भीतर मौजूद तीन लोग अपनी जान बचाने के बजाय शराब की बोटलों को गिरने और टूटने से बचाते नजर आए। इस घटना ने इंटरनेट पर लोगों का ध्यान खींचा है। हालांकि, भूकंप जैसी आपदा में सामान बचाने के बजाय अपनी सुरक्षा को प्राथमिकता देना बेहद जरूरी है। पनामा में आए शक्तिशाली भूकंप के दौरान एक दुकान के अंदर का दृश्य चर्चा में है।

बताया जा रहा है कि भूकंप के तेज झटकों से दुकान की अलमारियां और सामान हिलने लगे, लेकिन वहां मौजूद तीन लोग शराब की बोटलों को संभालने और उन्हें गिरने से बचाने में जुटे रहे। इस घटना को लेकर इंटरनेट पर लोगों ने हैरानी जताई। जहां भूकंप के दौरान आम तौर पर लोग सुरक्षित



जगह की ओर भागते हैं, वहीं ये लोग बोटलों को बचाने की कोशिश करते दिखाई दिए। भूकंप के समय सामान बचाने के लिए रुकना खतरनाक हो सकता है। घर या

दुकान के अंदर हों तो मजबूत मेज के नीचे झुककर सिर और गर्दन को ढकें तथा झटके रुकने तक पकड़े रहें। खिड़कियों, कांच और गिर सकने वाली

इंसानी दिमाग तक पहुंच बनाएगी तकनीक

● यूएन ने क्यों जताई चिंता; निजता और मानवाधिकारों पर कितना बड़ा खतरा?

संयुक्त राष्ट्र, एजेंसी। संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंटोनियो गुटेरस ने बुधस्पतिवार को पहली बार दुनिया को आगाह किया है कि न्यूरोटेक्नोलॉजी (मस्तिष्क से जुड़ी तकनीकें) इतनी तेजी से आगे बढ़ रही हैं कि आने वाले समय में सरकारों द्वारा इंसानी दिमाग तक पहुंच बनाने और उसे नियंत्रित करने की क्षमता मौलिक मानवाधिकारों के लिए गंभीर खतरा बन सकती है। यूएन की एक रिपोर्ट के अनुसार, इन उभरती प्रौद्योगिकियों के दुरुपयोग से लोगों को मनमाने ढंग से हिरासत में लिया जा सकता है, उनकी मानसिक स्थिति में बदलाव किया जा सकता है और निजता का गंभीर हनन हो सकता है। गुटेरस ने लिखा, जब न्यूरोटेक्नोलॉजी को न्याय प्रशासन पर लागू किया जाता है, तो यह गहरे मानवाधिकार संकट खड़े करती है। क्लिनिकल (अस्पतालों) के दायरे से बाहर निकलकर इसका जांच, न्यायिक और जेल प्रशासन में विस्तार अपने संभावित लाभों के साथ-साथ अत्यंत गंभीर जोखिम लेकर आता है।

भारत में दो दशकों से इस्तेमाल लेकिन वैज्ञानिक आधार कमजोर

भारतीय पुलिस पिछले दो दशकों से 'ब्रेन इलेक्ट्रिकल ऑसिलेशन सिग्नेचर' नामक तकनीक का इस्तेमाल कर रही है, ताकि यह जांचा जा सके कि संदिग्ध किसी अपराध में शामिल था या नहीं। मस्तिष्क की तरंगों को पढ़ने वाली इस तकनीक का वैज्ञानिक आधार बहुत सीमित है और इसे भारतीय अदालतों में सबूत के तौर पर स्वीकार नहीं किया जाता। फिर भी हत्या, दुर्घर्म और आतंकवाद जैसे सैकड़ों संवेदनशील मामलों में इसका उपयोग किया गया है। अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक समुदाय ने बीईओएस को मान्यता नहीं दी है, और 2008 में भारत सरकार द्वारा गठित एक समिति ने भी इसे 'सब-ऑप्टिमल' करार दिया था।

दुनिया में 'न्यूरो-राइट्स' की मांग ने पकड़ा जोर

मस्तिष्क डाटा की सुरक्षा को लेकर कई देशों में कानून बनाए जा रहे हैं। चिली : 2012 में अपने संविधान में मस्तिष्क गतिविधि की सुरक्षा को शामिल किया। अमेरिका : कैलिफोर्निया, कोलोराडो और मॉन्टाना जैसे राज्यों ने न्यूरल डेटा सुरक्षा कानून पारित किए हैं। लैटिन अमेरिका : अर्जेंटीना, ब्राजील, कोलंबिया और मैक्सिको में भी ऐसे ही कानूनी उपाय प्रस्तावित हैं।

एक ही व्यक्तिकी दो उम्र: चीन में पैदा होते ही 1 साल का हो जाता है बच्चा

बीजिंग, एजेंसी। दुनिया के ज्यादातर देशों में बच्चा जन्म के समय शून्य वर्ष का होता है और जन्मदिन आने पर उसकी उम्र एक साल बढ़ती है। लेकिन चीन की एक पुरानी परंपरा में बच्चे को जन्म लेते ही एक साल का माना जाता है। इसके बाद चीनी नववर्ष पर उसकी उम्र में एक साल और जुड़ जाता है। इस तरीके को 'शू सुई' कहा जाता है। चीन की पारंपरिक उम्र गणना का तरीका सामान्य व्यवस्था से अलग है। इसमें बच्चे के जन्म के समय ही उसकी उम्र एक साल मानी जाती है। इसके बाद उम्र बढ़ने के लिए जन्मदिन का इंतजार नहीं किया जाता, बल्कि चीनी नववर्ष आते ही एक साल और जोड़ दिया जाता है। मिसाल के तौर पर, यदि कोई बच्चा चीनी नववर्ष से ठीक एक दिन पहले पैदा होता है, तो पारंपरिक गणना में उसकी उम्र एक साल होगी। अगले दिन नया साल शुरू होते ही वह दो साल का माना जा सकता है,

जबकि वास्तविक समय के हिसाब से उसने दुनिया में केवल एक दिन बिताया होगा।

क्या है 'शू सुई' परंपरा?

उम्र गिनने के इस पारंपरिक तरीके को चीनी भाषा में 'शू सुई' कहा जाता है। इसकी जड़ें चीन की पुरानी सांस्कृतिक मान्यताओं और पारंपरिक चंद्र कैलेंडर से जुड़ी हैं। इस व्यवस्था में उम्र को केवल जन्मदिन से नहीं, बल्कि नए साल के आगमन से भी जोड़ा जाता था। कुछ विवरणों में इस परंपरा को प्राचीन चीन में शून्य की अवधारणा के इस्तेमाल से भी जोड़ा जाता है। हालांकि, इसकी पूरी व्याख्या केवल इसी एक कारण से करना सही नहीं होगा।

इसके पीछे ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परंपराओं की भी भूमिका रही है। इस तरीके में किसी व्यक्ति की उम्र

नदी का रास्ता रुकने और फिर बांध टूटने की आशंका

नदी में अचानक आई बाढ़ की वजह अभी साफ नहीं हो पाई है। हालांकि, स्थानीय प्रशासन को शक है कि चेकेंम्यार इलाके में नदी का बहाव किसी वजह से रुक गया होगा। अधिकारियों की आशंका है कि भूस्खलन के कारण नदी में मलबा जमा होने से अस्थायी बांध जैसी स्थिति बन गई हो और बाद में उसके टूटने से पानी एक साथ तेजी से नीचे की ओर बह निकला हो। फिलहाल यह केवल शुरुआती आशंका है। बाढ़ आने की असली वजह का पता जांच और मौके से मिलने वाली जानकारी के बाद ही चल सकेगा।

अलमारियों से दूर रहें। खुले स्थान पर हों तो इमारतों, बिजली के तारों और अन्य खतरनाक संरचनाओं से दूर रहें। गौरतलब है कि पनामा में शुक्रवार दोपहर 7.6 तीव्रता का भूकंप आया। भूकंप के बाद 18 घंटे के भीतर 100 से ज्यादा छोटे झटके महसूस किए गए। इससे घबराए लोग घरों और दफ्तरों से बाहर निकल आए।

शुरुआती खबरों के मुताबिक, 27 लोग घायल हुए और 400 से ज्यादा इमारतें क्षतिग्रस्त हुईं। इसका केंद्र राजधानी पनामा सिटी से करीब 200 किलोमीटर दूर अजुएरो प्रायद्वीप के पास था। पनामा की नागरिक सुरक्षा एजेंसी के अनुसार, वेरागुआस, हेरेरा और लॉस सैंटोस सहित कई प्रांतों में नुकसान हुआ। पेनोनोंमे शहर में एक चर्च का घंटाघर गिर गया और कई इमारतें क्षतिग्रस्त हो गईं। वेरागुआस में सड़कों पर दरारें आने की भी खबरें सामने आईं। पेनोनोंमे में मलबे की चपेट में आने से एक व्यक्ति घायल हो गया। भूकंप के बाद सुनामी की आशंका को देखते हुए पनामा, कोस्टा रिका, अल सल्वाडोर, पेरू, मैक्सिको, ग्वाटेमाला, निकारागुआ, कोलंबिया और इक्वाडोर के तटीय क्षेत्रों के लिए चेतावनी जारी की गई।



देखते ही देखते बह गए कई घर; गांवों में मचा हड़कंप

सुबह 6:40 बजे जारी हुआ बाढ़ का अलर्ट

नेपाल के राष्ट्रीय आपदा जोखिम न्यूनीकरण एवं प्रबंधन प्राधिकरण के बाढ़ पूर्वानुमान विभाग ने रविवार सुबह 6 बजकर 40 मिनट पर अलर्ट जारी किया। चेतावनी में बताया गया कि बुढ़ी गंडकी नदी में चुमनुव्री ग्रामीण नगरपालिका-6 की ओर से बड़ा बाढ़ का प्रवाह आ रहा है। लोगों से कहा गया कि बाढ़ का पानी गुजरने तक त्रिशूली दोभान तक नदी के आसपास न जाएं और सुरक्षित ऊंचे स्थानों पर रहें। प्रशासन ने समय रहते लोगों को खतरों से आगाह करने के लिए यह संदेश जारी किया।

पुलिस और प्रशासन ने संभाली मोर्चे पर कमान

हालात की गंभीरता को देखते हुए आरुघाट स्थित क्षेत्रीय पुलिस कार्यालय ने भी सुरक्षा संबंधी सलाह जारी की। नदी किनारे रहने वाले लोगों तक चेतावनी पहुंचाने के लिए लाउडस्पीकर का सहारा लिया गया और उन्हें जल्द से जल्द सुरक्षित स्थानों पर जाने के लिए कहा गया। प्रशासन की कोशिश है कि नदी का जलस्तर बढ़ने से किसी तरह की जनहानि न हो।

नए साल पर उम्र हो जाती है 2 साल



सामान्य गणना से एक या दो साल अधिक हो सकती है। यह अंतर इस बात पर निर्भर करता है कि उसका जन्म

चीनी नववर्ष से पहले हुआ या बाद में। सामान्य अंतरराष्ट्रीय पद्धति में उम्र जन्मतिथि के आधार पर गिनी जाती है और प्रत्येक जन्मदिन पर एक साल बढ़ती है। वहीं, 'शू सुई' में जन्म के समय एक साल जोड़ने और चीनी नववर्ष पर उम्र बढ़ाने की परंपरा के कारण दोनों गणनाओं में अंतर पैदा होता है। आधुनिक चीन में सरकारी दस्तावेजों और कानूनी मामलों में आमतौर पर जन्मतिथि पर आधारित उम्र का इस्तेमाल किया जाता है। हालांकि, पारंपरिक 'शू सुई' पद्धति कुछ लोगों, खासकर बुजुर्गों और कुछ ग्रामीण समुदायों में अब भी प्रचलित बताई जाती है। यह परंपरा दिखाती है कि उम्र गिनने का तरीका हमेशा हर समाज में एक जैसा नहीं रहा। जहां आज जन्मदिन उम्र बढ़ने का प्रमुख आधार है, वहीं चीन की इस पुरानी व्यवस्था में नए साल को भी उम्र से जोड़कर देखा जाता था।



अंबानी के समर्थकों पर भड़के एलन मस्क

पाखंड करने और बेतुके तर्क देने का आरोप लगाया

वाशिंगटन , एजेंसी। अमेरिकी उद्योगपति एलन मस्क ने भारत में अपनी उपग्रह इंटरनेट सेवा स्टारलिनक शुरू करने को लेकर भारतीय उद्योगपति मुकेश अंबानी पर खिन्नता का एक बार फिर निशाना साधा और उनके समर्थकों के तर्कों को पाखंडपूर्ण और बेतुका बताया। मस्क ने कहा कि अंबानी के समर्थक एक ओर दावा करते हैं कि स्टारलिनक उनकी कंपनी की सस्ती इंटरनेट सेवाओं का मुकाबला नहीं कर सकती, जबकि दूसरी ओर उसे एक बड़ा प्रतिस्पर्धी भी बताते हैं। मस्क ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक

पोस्ट में कहा कि स्टारलिनक के आने से भारत में प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी और आम लोगों को इंटरनेट सेवाओं के अधिक विकल्प मिलेंगे। उन्होंने कहा कि इससे अंबानी का मुनाफा कम हो सकता है, लेकिन उनका आरोपार बंद नहीं होगा। उन्होंने कहा कि अगर भारत में स्टारलिनक की सेवाएं बहुत महंगी होंगी, तो लोग उन्हें नहीं खरीदेंगे और ऐसे में कंपनी को अपनी सेवाओं की कीमतें किरफायती रखनी होंगी। मस्क ने कहा कि अंबानी के ऑनलाइन समर्थकों के बेतुके तर्कों का कोई मतलब नहीं है। उन्होंने कहा, एक ओर वे कहते हैं कि स्टारलिनक भारत में

अंबानी के लगभग एकाधिकार वाले कारोबार की बेहद सस्ती सेवाओं का मुकाबला नहीं कर सकती। वहीं, दूसरी ओर वे यह भी दावा करते हैं कि स्टारलिनक एक बेहद मजबूत प्रतिस्पर्धी साबित होगी। यह पूरी तरह पाखंड है और बातों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करना है। अमेरिकी प्रौद्योगिकी क्षेत्र के दिग्गज उद्योगपति ने कहा कि वास्तव में प्रतिस्पर्धा बढ़ने से भारत के आम लोगों को काफी फायदा होगा, क्योंकि उन्हें अधिक विकल्प मिलेंगे। मस्क ने कहा, अंबानी का मुनाफा कम होगा लेकिन उनका कारोबार बंद नहीं होगा। जाहिर है कि अगर



भारत में स्टारलिनक बहुत महंगी होगी तो कोई उसकी सेवा नहीं खरीदेगा इसलिए

स्पेसएक्स को कीमतें किरफायती रखनी होंगी। मस्क ने पोस्ट ऐसे समय में साझा की है जब वह भारत में स्टारलिनक की उपग्रह बॉडबैंड (सैटकॉम) सेवाओं की शुरुआत में लगातार हो रही देरी को लेकर मुकेश अंबानी की कड़ी आलोचना कर रहे हैं। अंबानी की कंपनी भारतीय दूरसंचार बाजार की प्रमुख कंपनियों में शामिल है और उपग्रह संचार सेवाएं शुरू करने की दौड़ में भी है। मस्क ने भारतीय उद्योगपति मुकेश अंबानी पर अपने तीखे हमले जारी रखते हुए शनिवार को मीडिया की खबरों के स्क्रीनशॉट साझा किए थे। इन खबरों में आरोप लगाया गया था कि रिलायंस इंडस्ट्रीज द्वारा वित्तपोषित एक कंपनी ने सोशल मीडिया पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के चुनाव प्रचार अभियानों को बढ़ावा देने में मदद की और रिलायंस से जुड़ी एक कंपनी ने सत्तारूढ़ दल को बड़ा राजनीतिक चंदा दिया।

फैंस ने मनाया अमिताभ बच्चन का बर्थडे



हिमेश रेशमिया ने संवारा जिसका कैरियर, घमंड में हुआ बर्बाद

लखनऊ के विनीत सिंह का नाम हिंदी म्यूजिक एपिलिटी शोज के इतिहास में खास तौर से दर्ज है। साल 2005 में 'सा रे गा मा पा सिंगिंग सुपरस्टार' के पहले रनर-अप बने विनीत ने उस वक्त देशभर में खूब सुर्खियां बटोरीं। शो के बाद उन्हें फिल्मी गाने भी मिले, जैसे 'हुक्का बाद', 'जलते दिव', 'प्रेम लीला' और 'दिल रंग दे', लेकिन करियर की राह वैसी नहीं रही जैसी उम्मीद थी। विनीत ने खुद कई इंटरव्यू में स्वीकार किया है कि सारेगामापा के बाद मिली सफलता और फेम को वे संभाल नहीं पाए।



उन्होंने कहा, "मैं सफलता और शोहरत को हैंडल नहीं कर पाया। लोकप्रियता देखकर मैं खुद को शाहरुख खान समझने लगा था। मुझे पता है कि गलती मेरी थी, लेकिन जो होता है, किसी वजह से होता है।" इस दौर में वो डिप्रेशन से भी गुजरे और लंबे समय तक बिना किसी से बात

किए अकेले ही इस स्थिति से बाहर निकले। नतीजा ये रहा कि धीरे-धीरे वो म्यूजिक इंडस्ट्री से किनारे होते गए। कई सालों तक वो मुंबई में संघर्ष करते रहे, कभी-कभी छोटे-मोटे प्रोजेक्ट्स मिलते, लेकिन वह 'स्टार' वाली छवि नहीं बनी रही जो सारेगामापा के बाद बनी थी। 2022 में विनीत ने 'इंडियन आइडल 13' के ऑडिशन में हिस्सा लिया और एक बार फिर सुर्खियों में आ गए। शो के प्रोमो में जब नेहा कक्कड़ ने उन्हें देखा, तो वो हैरान रह गईं। नेहा ने कहा कि वो विनीत को जज नहीं कर सकती, क्योंकि वो पहले से ही एक शो के स्टार रहे हैं। विनीत ने ज़िद करके उन्हें जज करने के लिए राजी किया और कहा कि वो इस मंच पर अपने करियर की दूसरी पारी शुरू करना चाहते हैं।

मां दुर्गा की अमर गाथा बड़े पर्दे पर होगी जीवंत

नवरात्रि के पावन अवसर पर भारतीय एनिमेशन और सिनेमा जगत से एक बड़ा और प्रेरणादायक ऐलान सामने आया है। मां दुर्गा और उनके शक्ति स्वरूपों की महिमा पर आधारित एक भव्य एनिमेटेड फिल्म 'महा देवी आदिशक्ति — द लीजेंड ऑफ मां दुर्गा' का पहला लुक जारी किया गया है। जहां आज का मीडिया और सिनेमा जगत आईआई का तेजी से इस्तेमाल कर रहा है, वहीं इस फिल्म के मेकर्स ने भारतीय पौराणिक कला और अध्यात्म की पवित्रता को बनाए रखने के लिए एक अनूठा रास्ता चुना है। यह फिल्म पूरी तरह से हैंड-ड्रॉन (हाथ से बनी) एनिमेशन तकनीक पर आधारित होगी, जिसके लिए 150

से अधिक कुशल एनिमेटर्स की टीम दिन-रात काम कर रही है। महा देवी आदिशक्ति' की कहानी सनातन धर्म की उन अमर कथाओं पर आधारित है, जिन्होंने सदियों से भारतीय सभ्यता और संस्कृति को दिशा दी है। फिल्म में मां दुर्गा के विभिन्न स्वरूपों के दर्शन होंगे, जिनमें महािासुर का वध करने वाली महािासुरमर्दिनी और अघर्म का नाश करने वाली मां काली के अलौकिक रूपों को प्रमुखता से दिखाया जाएगा। फिल्म का निर्देशन मिलिंद नंदनवार कर रहे हैं, जबकि इसकी कहानी और पटकथा लोकप्रिय लेखक अक्षय गुप्ता ने लिखी है। अर्था एंटरटेनमेंट एंड एनिमेशन के बैनर तले निर्माता गौरव मल्होत्रा द्वारा बनाई

जा रही इस फिल्म में संगीत श्रेयस पुराणिक का होगा। यह फिल्म फरवरी 2027 में दुनियाभर के सिनेमाघरों में रिलीज की जाएगी। फिल्म के विजन पर बात करते हुए निर्देशक मिलिंद नंदनवार ने कहा, भारत हमेशा से आध्यात्मिकता, भक्ति और कालातीत ज्ञान की भूमि रहा है। सनातन धर्म की कहानियों ने हमारी सभ्यता को गढ़ा है और इनका संदेश हर युग में प्रासंगिक है। ये कथाएं हमें सिखाती हैं कि बुराई चाहे कितनी भी ताकतवर क्यों न हो, अंत में धर्म और सत्य की ही विजय होती है। हम खुद को धन्य महसूस करते हैं कि मां ने अपनी गाथा उनके बच्चों तक पहुंचाने के लिए हमें माध्यम चुना।



'गणेश डस्ट टू स्टारडस्ट' का ट्रेलर रिलीज

कुछ सपने बेहद साधारण परिस्थितियों में जन्म लेते हैं, लेकिन उन्हें हकीकत में बदलने के लिए असाधारण साहस, लगातार मेहनत और खुद पर अटूट विश्वास की जरूरत होती है। इसी जज्बे को बड़े पर्दे पर जीवंत करते हुए मशहूर कोरियोग्राफर और फिल्ममेकर गणेश आचार्य ने अपनी आगामी निर्देशित फिल्म 'गणेश डस्ट टू स्टारडस्ट' का बहुप्रतीक्षित ट्रेलर रिलीज कर दिया है। फिल्म में शिवांशु सोनी, आलोक शर्मा, सुकन्या कलान और साक्षी पावस्कर नजर आएंगे। फिल्म की घोषणा और पहला पोस्टर जारी होने के बाद अब ट्रेलर दर्शकों को एक ऐसी दुनिया की झलक

दिखाता है, जहां सपने परिस्थितियों से कहीं बड़े हैं और सफलता की ओर बढ़ने वाला हर कदम अपने साथ नई चुनौतियां लेकर आता है। भावनाओं, दमदार पलों और डांस की ऊर्जा से भरपूर यह ट्रेलर महत्वाकांक्षा, जिम्मेदारियों, त्याग और जिंदगी की मुश्किलों से लड़कर आगे बढ़ने के जज्बे को सामने लाता है। फिल्म की मूल भावना उन लोगों की कहानी को दर्शाती है, जो तमाम मुश्किलों के बावजूद सपने देखने की हिम्मत रखते हैं। यह याद दिलाती है कि सपनों की कोई सीमा नहीं होती, लेकिन उन्हें पूरा करने के लिए धैर्य, दृढ़ संकल्प और सारों की मेहनत जरूरी होती है।

सलमान के साथ पैचअप पर बोलीं Ex गर्लफ्रेंड सोमी अली

एक वक्त था जब बॉलीवुड गलियारों में सलमान खान और सोमी अली के अफेयर के चर्चे थे। इनके रिश्ते ने काफी सुर्खियां बटोरी थीं। एक टाइम पर दोनों की शादी की भी खबर आई थी। दोनों का रिलेशनशिप करीब 8 साल तक चला। लेकिन फिर सलमान और सोमी के रिश्ते में कड़वाहट आने लगी और रास्ते अगल-अलग हो गए। सलमान के साथ अपने रिश्ते को लेकर सोमी अली पहले भी कई बार बात कर चुकी हैं। एक बार फिर उन्होंने अपने टूटे रिश्ते पर बात की। उन्होंने साफ कहा कि वो सलमान खान के साथ दोबारा पैचअप नहीं

करेंगी। सोमी अली से पूछा गया कि क्या वो दोबारा सलमान खान के साथ पैचअप कर सकती हैं? बॉलीवुड लाइफ सग बातचीत में उन्होंने कहा उन्हें कोई इंटररेस्ट नहीं है। उन्होंने कहा, "नहीं मुझे कोई दिलचस्पी नहीं है पैचअप करने में, क्योंकि जब मैंने उनको छोड़ा था तब उन्होंने मुझे कहा था कि तुम मेरे बिना सिक्के के बराबर भी नहीं हो। मेरे नाम के बिना तुम्हारा कोई ही वजूद नहीं है।" सलमान खान और सोमी एक टाइम पर एक-दूसरे के काफी करीब थे। सोमी को सलमान खान पर क्रश था। 16 साल की उम्र में वो सलमान से शादी करने

के इरादे से इंडिया आई थीं। सोमी सलमान के प्यार में दीवानी थीं। करीब 8 साल के रिश्ते के बाद 1999 में दोनों का ब्रेकअप हो गया, जिसके बाद वो इंडिया छोड़कर अमेरिका चली गईं। अगर बात करें सोमी अली की वकंफ्रेट की, तो वो कई फिल्मों में नजर आ चुकी हैं। 90 दशक में उन्होंने बॉलीवुड की कई फिल्मों में काम किया है। वो कृष्ण अवतार, अंत, ऑवेलन, माफिया, चुप जैसे फिल्मों में नजर आई थीं। हालांकि, बॉलीवुड में वो कुछ खास कमाल नहीं दिखा पाईं। पर सलमान खान के साथ रिलेशनशिप को लेकर चर्चा में रही थीं।

अपने 9 वें सीजन के साथ हमेशा के लिए अलविदा कहने जा रहे करण जोहर

बॉलीवुड के मशहूर फिल्ममेकर करण जोहर का लोकप्रिय सेलिब्रिटी चैट शो 'कॉफी विद करण' अपने 9वें सीजन के साथ हमेशा के लिए अलविदा कहने जा रहा है। साल 2004 में शुरू हुए इस आइकॉनिक शो ने भारतीय टेलीविजन और OTT प्लेटफॉर्म पर एंटरटेनमेंट टॉक शोज के मायने पूरी तरह बदल दिए थे। हालांकि, इस शो के फैसले के लिए एक राहत भरी खबर भी सामने आ रही है—करण जोहर इस फॉर्मेट को पूरी तरह खत्म नहीं कर रहे, बल्कि अपने प्रोडक्शन बैनर के तहत एक नए रंग-रूप में चैट शो लाने की तैयारी में हैं।



क्यों बंद हो रहा है 'कॉफी विद करण'?
खबरों के मुताबिक 'कॉफी विद करण' को बंद करने का सबसे बड़ा कारण इंटेलेक्चुअल प्रॉपर्टी (IP) राइड्स है। 'कॉफी विद करण' का ओरिजनल आईपी स्टार नेटवर्क और JioHotstar के पास है। करण जोहर अब अपने प्रोडक्शन बैनर, 'धर्मा प्रोडक्शंस' के तहत ऐसा शो डिजाइन करना चाहते हैं, जिसके सवाधिकार और क्रिएटिव कंट्रोल पूरी तरह उनके पास रहें। चर्चा है कि करण जोहर नए टॉक शो को सीधे यूट्यूब या आधुनिक डिजिटल प्लेटफॉर्म पर लॉन्च कर सकते हैं, जिससे शो को

वैश्विक स्तर पर अधिक स्वतंत्रता और ऑडियंस रीच मिल सके। हाल ही में रिलीज हुए सीजन 9 के प्रोमो में करण जोहर काफी भावुक नजर आए। उन्होंने साल 2004 के उन पलों को याद किया जब उन्होंने अपने पिता दिवंगत यश जोहर के साथ इस शो का आइडिया शेयर किया था। शो के प्रीमियर के कुछ समय बाद ही उनके पिता का निधन हो गया था, लेकिन यह शो करण की पहचान का एक अटूट हिस्सा बन गया। करण ने चुटकी लेते हुए यह भी स्वीकार किया कि इस शो ने उन्हें 'नेपोटिज्म' शब्द का ब्रांड एंबेसडर बना दिया। उन्होंने शो के गॉसिप्स पर मजाकिया अंदाज में कहा कि 'कॉफी विद करण' ने कई सितारों के करियर बनते और बिगड़ते देखे हैं, कई जोड़ियों को मिलाया और कई का ब्रेकअप भी कराया।

'रामायण' के दो नए पोस्टर जारी

नितेश तिवारी के निर्देशन में बन रही 'रामायण' इस साल की सबसे चर्चित फिल्मों में से एक है, जिसके चलते दर्शकों की इससे एक-एक अपडेट पर नजर टिकी हुई है। अब इस फिल्म को रिलीज होने को एक महीना भी नहीं बचा है, ऐसे में मेकर्स पूरी तरह से इस कोशिश में जुटे हैं कि वह दर्शकों को इस फिल्म से जोड़े रखें। 'रामायण' के निर्माताओं ने रणवीर कपूर के जन्मदिन पर एक बिहाइंड द सीन वीडियो जारी किया था और फिर इसके कुछ दिन बाद फिल्म में राजा दशरथ की भूमिका निभा रहे अरुण गोविल का पोस्टर जारी किया। इसके बाद में मेकर्स ने कैथरी की भूमिका निभा रही लारा दत्ता और मंथरा का रोल निभा रही शीबा चड्ढा का पोस्टर जारी किया। अब मेकर्स ने फिल्म

से दो और पोस्टर जारी कर दिए हैं, जिसमें दर्शकों की उत्सुकता और बढ़ा दी है। जारी किए गए पोस्टर में रू में रणवीर कपूर भगवान राम के रूप में और अरुण गोविल राजा दशरथ के रूप में नजर आ रहे हैं। पहले पोस्टर में राम के वनवास के पहले की झलक देखने को मिलती है, जहां वनवास में जाने से पहले राम अपने पिता राजा दशरथ के सामने झुककर प्रणाम करते हुए दिख रहे हैं, जबकि दूसरे में वे ज्येष्ठ पुत्र होने के नाते अपने पिता की अस्थि विसर्जित करते हुए दिखाए गए हैं। पोस्टर जारी करते हुए मेकर्स ने कैप्शन में लिखा— 'एक पिता, जो अपने वंश के बंधा है और एक बेटा जो अपने फर्ज से बंधा है। किसी को नहीं पता था कि ये उनकी अंतिम विदाई होगी।' ये दोनों ही पोस्टर राम और दशरथ के रिश्ते पर केंद्रित हैं।



बार-बार पुलिसवाला बनकर थक गए हैं जयदीप अहलावत?

अजय देवगन की सुपरहिट फिल्म फ्रेंचाइजी 'दृश्यम 3' भी ब्लॉकबस्टर साबित हो रही है। ये इस फ्रेंचाइजी की आखिरी फिल्म थी, जिसे लोग खूब पसंद कर रहे हैं। 'दृश्यम 3' में पुलिसवाले के किरदार में इस बार जयदीप अहलावत नजर आए। उन्होंने फिल्म में राजवीर सिंह तोमर का रोल निभाया है। पर लगता है कि जयदीप अहलावत बार बार



फिल्मों में पुलिसवाले का रोल कर के थक गए हैं। उन्होंने खुद इस बात को कबूल किया है और उम्मीद जताई है कि लोग अब उन्हें पुलिसवाले का रोल ऑफर नहीं करेंगे। जयदीप अहलावत ने वैरायटी इंडिया से 'दृश्यम 3' की बंपर कामयाबी को लेकर बातचीत की। इस दौरान उन्होंने एक ब्लॉकबस्टर फिल्म का हिस्सा बनने पर खुशी तो जताई, लेकिन इस बात से थोड़े

परेशान भी लगे कि उन्हें हर कोई पुलिसवाले का रोल ही ऑफर करता है। उन्होंने बताया कि अब वो और वैलेंजिंग और बड़े रोल्स करना चाहते हैं। 'दृश्यम 3' की कामयाबी पर सवाल होने पर जयदीप अहलावत ने कहा, "ब्लॉकबस्टर सबसेसमुझे नहीं पता कि ये मेरा करियर कैसे बदलने वाला है। पर ये जो भी है, मुझे उम्मीद है कि इससे अच्छा बदलाव होगा।

अजमल कसाब और उज्ज्वल निकम के बीच हुई अदालती जंग फिर चर्चा में

अपकर्मिण फिल्म प्रहार: द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ उज्ज्वल निकम सुर्खियों में है। बॉलीवुड एक्टर राजकुमार राव की यह फिल्म 26/11 मुंबई आतंकी हमले के मुख्य दोषी अजमल कसाब और सरकारी वकील उज्ज्वल निकम के बीच अदालत में हुई कानूनी जंग को फिर से चर्चा में ले आई है। यह फिल्म 16 अक्टूबर को सिनेमाघरों में रिलीज हो रही है। फिल्म का ट्रेलर इस ऐतिहासिक कोर्टरूम ड्रामे की झलक दे चुका है, जिसमें कसाब ने अपनी उम्र को लेकर एक ऐसा दावा किया था, जिसने केस की पूरी दिशा ही बदलकर रख दी थी। दरअसल, 26/11 मुंबई आतंकी हमले के मुख्य दोषी अजमल कसाब ने फांसी की सजा से बचने के लिए अदालत में खुद को महज 17 साल का नाबालिग बताने का पैंतरा चला था।



अप्रैल 2009 में मुकदमा शुरू होते ही, कसाब के वकील अब्बास काजमी ने अदालत में उसकी उम्र को लेकर याचिका दायर की और मामला जुवेनाइल जरिस्टस कोर्ट में भेजने की मांग की। यदि अदालत उसे नाबालिग मान लेती, तो भारतीय कानून के तहत उसे मौत की सजा नहीं दी जा सकती थी और उसकी अधिकतम सजा केवल तीन साल के लिए जुवेनाइल रिमांड होम तक सीमित रह जाती। सरकारी वकील उज्ज्वल निकम ने इस दलील का कड़ा विरोध करते हुए इसे सजा से

बचने और केस को लंबा खींचने की चाल बताया। निकम की मांग पर, सर जेजे अस्पताल के चार डॉक्टरों की टीम ने डॉ. नंदा कुमार के नेतृत्व में केस की विस्तृत फॉरेंसिक जांच की। बोन ऑसिफिकेशन टेस्ट और दांतों के एक्स-रे से साफ हुआ कि 26 नवंबर, 2008 की रात कसाब की उम्र कम से कम 19 साल 6 महीने थी। सरकारी और मेडिकल रिकॉर्ड्स ने कसाब के झूठ की पूरी तरह से हवा निकाल दी। आयर रोड जेल की तत्कालीन अधीक्षक स्वाति साठे

ने अदालत में गवाही दी कि जेल में दाखिल होते समय कसाब ने खुद अपनी उम्र 21 साल दर्ज कराई थी। इसके अतिरिक्त, 27 नवंबर, 2008 को इलाज के दौरान नायर अस्पताल के डॉक्टर राघवन को भी कसाब ने खुद को 21 साल का ही बताया था। सबसे अहम सबूत कसाब का धारा 164 के तहत मजिस्ट्रेट के सामने दर्ज हुआ खुद का इकबालिया बयान था, जिसमें उसने आधिकारिक तौर पर स्वीकार किया था कि वह बालिग है और उसकी उम्र 21 साल है। इन तमाम सरकारी दस्तावेजों और बयानों ने कोर्ट के सामने उसके नाबालिग होने के दावे को पूरी तरह से खारिज कर दिया। विशेष न्यायाधीश एमएल तहिलयाणी ने कसाब के फरीदकोट (पाकिस्तान) से जन्म प्रमाण पत्र मंगाने की बचाव पक्ष की मांग को खारिज कर दिया और मेडिकल जांच को निर्णायक सबूत माना। उज्ज्वल निकम के अनुसार, कसाब अवसर कोर्ट में मासूमियत और आंसू बराने का नाटक करता था, लेकिन वैज्ञानिक सबूतों के आगे उसकी हर चाल नाकाम साबित हुई। अगस्त 2012 में सुप्रीम कोर्ट के जरिस्टस आफताब आलम और जरिस्टस सीके प्रसाद की पीठ ने भी इस मेडिकल रिपोर्ट को सही मानते हुए कसाब की फांसी की सजा बरकरार रखी।

रायपुर: डब्ल्यूआरएस दशहरा मैदान में मचेगी भव्य धूम, 101 फीट ऊंचे रावण दहन का साक्षी बनेगा राजधानी का जनसैलाब

रायपुर (जनता के गोठ) राजधानी रायपुर के डब्ल्यूआरएस कॉलोनी स्थित दशहरा मैदान में इस वर्ष विजयादशमी का पर्व ऐतिहासिक और भव्य रूप में मनाने की तैयारी पूरी हो चुकी है। असत्य पर सत्य और बुराई पर अच्छाई की जीत के प्रतीक इस पावन पर्व पर मैदान में 101 फीट ऊंचे दशानन रावण का दहन किया जाएगा। भव्य आतिशबाजी और गगनचुंबी जय श्रीराम के जयघोष के बीच जगमगाता यह मैदान इस बार भी राजधानीवासियों के लिए मुख्य आकर्षण का केंद्र रहेगा। आयोजन में लगभग 5 लाख लोगों के पहुंचने की संभावना जताई जा रही है।

राज्यपाल और मुख्यमंत्री सहित कई दिग्गज होंगे शामिल

इस गरिमामय और ऐतिहासिक उत्सव में छत्तीसगढ़ के राज्यपाल महामहिम श्री रमेन देका, मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय,



राज्यसभा सांसद श्रीमती लक्ष्मी वर्मा, रायपुर सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल, रायपुर नगर निगम की महापौर श्रीमती मीनल चौबे सहित प्रदेश के कई मंत्री,

विधायक और अन्य जनप्रतिनिधि विशेष रूप से उपस्थित रहेंगे। **विधायक पुरन्दर मिश्रा ने दी तैयारियों की जानकारी**



रायपुर उत्तर विधानसभा क्षेत्र के लोकप्रिय विधायक श्री पुरन्दर मिश्रा ने उत्सव की तैयारियों की जानकारी देते हुए बताया कि यह आयोजन राजधानी की सांस्कृतिक

विशेष जोर दिया जा रहा है। **व्यापक प्रबंधों पर विशेष फोकस:**

- पार्किंग और यातायात: वाहनों की सुव्यवस्थित पार्किंग और ट्रैफिक के सुचारु संचालन के लिए पुख्ता इंतजाम किए गए हैं ताकि नागरिकों को कोई असुविधा न हो।
- पेयजल और स्वच्छता: मैदान और आसपास के क्षेत्रों में श्रद्धालुओं के लिए स्वच्छ पेयजल और साफ-सफाई की चाक-चौबंद व्यवस्था की गई है।
- सुरक्षा एवं भीड़ प्रबंधन: लाखों की संख्या में पहुंचने वाले श्रद्धालुओं की सुरक्षा और सुव्यवस्थित आवाजाही के लिए पुलिस प्रशासन और आयोजन समिति मिलकर काम कर रहे हैं।
- चिकित्सा और आपातकालीन सेवाएं: किसी भी आकस्मिक स्थिति से निपटने के लिए प्राथमिक उपचार और आपातकालीन चिकित्सा दलों की तैनाती

की गई है।

- अनिशमन सुरक्षा: रावण दहन और आतिशबाजी के दौरान सभी सुरक्षा मानकों का कड़ाई से पालन सुनिश्चित किया जाएगा।

नागरिकों से परिवार सहित शामिल होने की अपील

विधायक श्री पुरन्दर मिश्रा ने प्रदेश और राजधानीवासियों से अपील की है कि वे अपने परिवार के साथ इस भव्य उत्सव में शामिल होकर सनातन संस्कृति की इस गौरवशाली परंपरा के साक्षी बनें। साथ ही उन्होंने सभी से प्रशासनिक दिशा-निर्देशों का पालन करने और आतिशबाजी के दौरान सुरक्षित दूरी बनाए रखने की अपील की है। यह आयोजन न सिर्फ रावण दहन का प्रतीक है, बल्कि भगवान श्रीराम के आदर्श—सत्य, धर्म, मर्यादा और त्याग—को अपने जीवन में उतारने का एक पावन अवसर भी है।

पेंशनरों की समस्याओं पर 15 अक्टूबर को होगी बैठक

रायपुर (जनता के गोठ) छत्तीसगढ़ के पेंशनरों की लंबित समस्याओं के निराकरण और उनके हितों से जुड़े विषयों पर विचार-विमर्श के लिए संचालनालय पेंशन एवं भविष्य निधि, छत्तीसगढ़ द्वारा 15 अक्टूबर 2026 को बैठक आयोजित की गई है। बी जी काले, संयुक्त संचालक, पेंशन एवं भविष्य निधि द्वारा जारी पत्र के अनुसार बैठक दोपहर 12 बजे संचालनालय के बैठक कक्ष क्रमांक 1/3/22, इंद्रावती भवन, नया रायपुर अटल नगर में होगी।

बैठक में भारतीय राज्य पेंशनर्स महासंघ, छत्तीसगढ़ के प्रांताध्यक्ष वीरेन्द्र नामदेव सहित प्रदेश के विभिन्न पेंशनर संगठनों के प्रांताध्यक्षों को आमंत्रित किया गया है। बैठक की अध्यक्षता एस जयवर्धन आई ए एस संचालक, पेंशन एवं भविष्य निधि करेंगे।

बैठक के निर्धारित एजेंडे में पेंशन कल्याण मंडल का गठन, छत्तीसगढ़ पेंशन कल्याण निधि नियम, 1997 में प्रभावी संशोधन



एवं उसका व्यापक प्रचार-प्रसार, संशोधित पेंशन भुगतान आदेश (पीपीओ) की ऑनलाइन उपलब्धता, लंबित पेंशन एवं परिवार पेंशन प्रकरणों का शीघ्र निराकरण तथा पेंशनरों के लिए प्रभावी शिकायत एवं संवाद व्यवस्था विकसित करने जैसे महत्वपूर्ण विषय शामिल हैं।

भारतीय राज्य पेंशनर्स महासंघ, छत्तीसगढ़ ने इस बैठक को पेंशनरों की समस्याओं के समाधान की दिशा में महत्वपूर्ण पहल बताते हुए आशा व्यक्त की है कि चर्चा में उठने वाले विषयों पर ठोस निर्णय लिए



जाएँगे तथा लंबित मामलों के निराकरण के लिए समयबद्ध कार्यवाही सुनिश्चित की जाएगी।

महासंघ का मानना है कि सेवानिवृत्त कर्मचारियों को पेंशन एवं अन्य स्वत्वों के लिए अनावश्यक परेशानियों का सामना नहीं करना पड़े। इसके लिए पेंशन संबंधी नियमों एवं प्रक्रियाओं को सरल, पारदर्शी और पेंशनर हितैषी बनाना जाना आवश्यक है। महासंघ बैठक में पेंशनरों की समस्याओं को प्रमुखता से रखकर उनके व्यावहारिक एवं स्थायी समाधान की अपेक्षा करेगा।

अनुकंपा नियुक्ति व्यवस्था समाप्त करने की संभावित तैयारी का कर्मचारी संगठनों ने किया कड़ा विरोध

कहा—यह निर्णय कर्मचारी जगत के लिए होगा काला अध्याय, शासन ने कदम बढ़ाया तो मंत्रालय से लेकर निचले स्तर तक होगा आंदोलन

रायपुर (जनता के गोठ) **छत्तीसगढ़** राज्य के गठन के पश्चात शासकीय सेवाकाल के दौरान किसी कर्मचारी अथवा अधिकारी के आकस्मिक निधन की स्थिति में उनके आश्रित परिवार को अनुकंपा नियुक्ति प्रदान किए जाने की व्यवस्था शासन द्वारा लागू है। यह व्यवस्था किसी परिवार को दी जाने वाली सामान्य नियुक्ति नहीं, बल्कि उस परिवार पर अचानक आई आर्थिक एवं सामाजिक विपदा के समय शासन की ओर से दिया जाने वाला मानवीय सहारा है।

विश्वस्त सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार शासन स्तर पर अनुकंपा नियुक्ति की वर्तमान व्यवस्था को



समाप्त किए जाने पर विचार किए जाने की जानकारी सामने आ रही है। इस संभावित निर्णय को लेकर प्रदेश के कर्मचारी-अधिकारी संगठनों में भारी आक्रोश एवं चिंता व्याप्त है। कर्मचारी संगठनों का कहना है कि शासकीय सेवा में कार्यरत कर्मचारी अपने सेवाकाल के दौरान शासन के प्रति पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन

करता है। यदि दुर्भाग्यवश सेवाकाल में ही उसकी मृत्यु हो जाती है, तो उसके परिवार के समक्ष आय का प्रमुख स्रोत समाप्त हो जाता है। ऐसे कठिन समय में अनुकंपा नियुक्ति उस परिवार को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में शासन की संवेदनशील एवं मानवीय पहल रही है। ऐसी व्यवस्था को समाप्त करना न केवल हजारों प्रभावित परिवारों के

भविष्य को अंधकारमय करने वाला कदम होगा, बल्कि यह शासन की कर्मचारी हितैषी एवं संवेदनशील छवि के लिए भी होगा।

कर्मचारी संगठनों ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि यदि शासन द्वारा अनुकंपा नियुक्ति की व्यवस्था समाप्त करने अथवा उसे कमजोर करने का कोई निर्णय लिया जाता है, तो इसे किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा।

संगठनों ने शासन को आगाह करते हुए कहा है कि अनुकंपा नियुक्ति व्यवस्था कर्मचारी परिवारों के लिए जीवन का सहारा है, इसे समाप्त करने का प्रयास कर्मचारी जगत के साथ अन्याय होगा। सरकार यदि ऐसा ही निर्णय लेती है तो प्रदेश के कर्मचारी-अधिकारी संगठन एकजुट होकर इसका पुरजोर विरोध करेंगे तथा मंत्रालय से लेकर प्रदेश के अंतिम छोर तक चरणबद्ध एवं व्यापक जमीनी संघर्ष किया जाएगा।

छत्तीसगढ़ कर्मचारी अधिकारी फेडरेशन के प्रांतीय संयोजक कमल

वर्मा, मंत्रालयीन कर्मचारी संघ के अध्यक्ष चंद्रकांत पाण्डेय, तृतीय वर्ग कर्मचारी संघ के अध्यक्ष पवन कुमार शर्मा, चंद्रशेखर तिवारी, लिपिक वर्ग के प्रांत अध्यक्ष रोहित एवं संजय सिंह, विभागाध्यक्ष कर्मचारी संघ के अध्यक्ष जय कुमार साहू सहित विभिन्न कर्मचारी संगठनों ने मुख्यमंत्री एवं शासन से मांग की है कि अनुकंपा नियुक्ति की वर्तमान व्यवस्था को समाप्त करने संबंधी किसी भी प्रस्ताव पर आगे बढ़ने के बजाय कर्मचारी संगठनों से चर्चा की जाए तथा इस मानवीय व्यवस्था को और अधिक प्रभावी एवं सरल बनाया जाए।

कर्मचारी संगठनों ने कहा—किसी कर्मचारी की आकस्मिक मृत्यु के बाद उसके परिवार को बेसहारा छोड़ना कल्याणकारी शासन की नीति नहीं हो सकती। अनुकंपा नियुक्ति समाप्त करने का निर्णय लिया गया तो यह छत्तीसगढ़ के कर्मचारी जगत के लिए एक काला अध्याय साबित होगा।

कलेक्टर ने शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय महाराजगंज का किया औचक निरीक्षण



शिक्षिका की भूमिका में दिखीं कलेक्टर

बलरामपुर (जनता के गोठ) : कलेक्टर चंदन संजय निपाठी ने आज शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय महाराजगंज का औचक निरीक्षण किया। उन्होंने कक्षा 10वीं, 11वीं एवं 12वीं वाणिज्य, 11वीं कला तथा 11वीं जीवविज्ञान की कक्षाओं में पहुंचकर विद्यार्थियों से पाठ्यक्रम पर चर्चा की और उनकी पढ़ाई की प्रगति जानी।

निरीक्षण के दौरान कलेक्टर एक शिक्षिका की भूमिका में भी नजर आईं। कक्षा 11वीं जीवविज्ञान में उन्होंने हाथ में चॉक लेकर ब्लैकबोर्ड पर “मैगिफेरा इंडिका” लिखा और विद्यार्थियों से पूछा कि यह किस फल का वानस्पतिक नाम है। विद्यार्थियों ने तत्परता से उत्तर दिया कि यह फलों के राजा आम का वानस्पतिक नाम है। सही उत्तर पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कलेक्टर ने कहा कि मेहनत का कोई विकल्प नहीं होता। इसी तरह कक्षा 11वीं कला में उन्होंने ग्लोब मंगवाकर विद्यार्थियों को विभिन्न देशों की भौगोलिक स्थिति का व्यावहारिक प्रदर्शन कराया, जिससे बच्चों ने रुचि के साथ भूगोल को समझा।

कलेक्टर ने विद्यार्थियों को

नियमित अभ्यास के साथ पैटर्न आधारित तैयारी और समय प्रबंधन पर विशेष ध्यान देने की सलाह दी। उन्होंने बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि वे लगन से पढ़ाई कर टॉपर बनें और आगे चलकर डॉक्टर, इंजीनियर तथा आईएएस अधिकारी बनकर अपने परिवार, गांव और जिले का नाम रोशन करें।

विद्यालय में बेहतर शैक्षणिक वातावरण सुनिश्चित करने के लिए कलेक्टर ने प्राचार्य को कक्षाओं की नियमित मॉनिटरिंग करने तथा गृहकार्य के साथ प्रतिदिन कक्षा में ही विद्यार्थियों को अभ्यास कार्य देने के निर्देश दिए। उन्होंने पढ़ाए जा चुके पाठ्यक्रम का नियमित पुनरावलोकन कराने और बोर्ड परीक्षा में शामिल होने वाले विद्यार्थियों से पुराने प्रश्नपत्र हल कराने को कहा, ताकि वे परीक्षा के स्वरूप से भली-भाँति परिचित हो सकें। साथ ही विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों को नियमित रूप से प्रायोगिक कार्य कराने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने शिक्षकों से ऐसी प्रभावी शिक्षण विधियाँ अपनाने का आग्रह किया, जिनसे विद्यार्थी विषयों को सरलता और रुचि के साथ समझ सकें। उन्होंने कहा कि शिक्षकों का समर्पण और विद्यार्थियों की मेहनत ही बेहतर परीक्षा परिणाम की नींव है।

एम ए छत्तीसगढ़ी भाषा डिग्री धारी छात्रों के प्रतिनिधि मण्डल ने रायपुर सांसद बृजमोहन अग्रवाल से की मुलाकात

रायपुर (जनता के गोठ) को एम ए छत्तीसगढ़ी भाषा डिग्री धारी छात्र छात्राओं का एक प्रतिनिधि मण्डल रायपुर सांसद बृजमोहन अग्रवाल के निवास में बैठक कर अपनी बात रखी जिसमे उनके द्वारा शिक्षा मंत्री रहते हुए वर्ष 2024 में विधान सभा में छत्तीसगढ़ी भाषा में शिक्षा और रोजगार के लिए हुए घोषणा को पालन करवाने और नई शिक्षा नीति 2020 को पूर्ण रूप से लागू करवाने की मांग की गई , सांसद बृजमोहन अग्रवाल ने कहा कि नई शिक्षा नीति में यह स्पष्ट प्रावधान है कि राज्य की राज भाषा, स्थानीय भाषा में शिक्षा प्रदान करना है जिसके लिए 8 वी अनुसूची कोई बाधा उत्पन्न नहीं करता है साथ ही तुरंत मुख्यमंत्री को पत्र लिखते हुए कहा कहा कि छत्तीसगढ़ी भाषा हमारी पहचान है, छत्तीसगढ़ी भाषा 2007 से राजभाषा बन चुका है, और नई शिक्षा नीति भी स्थानीय भाषा में शिक्षा का समर्थन करता है यह हम जरूर लागू करेंगे और सरकार को पत्र लिखते हुए छात्रों की मांग को जायज ठहराया साथ ही कहा कि मेरे द्वारा एम ए छत्तीसगढ़ी भाषा डिग्री धारी छात्र छात्राओं के हित को ध्यान में रखते हुए छत्तीसगढ़ी भाषा शिक्षक भर्ती की घोषणा की गई



थी साथ ही कहा कि लोक सभा में छत्तीसगढ़ी भाषा को 8 वी अनुसूची में शामिल करने के लिए प्रस्ताव लाया जाएगा द्य इस प्रतिनिधि मण्डल में छत्तीसगढ़ी राजभाषा आयोग के पूर्व अध्यक्ष रामेंद्र नाथ मिश्रा, राज आंदोलन से जुड़े उदय भान सिंह चौहान, रमा जोशी, प्रभा जोशी,

रेखा जोशी, रामेश्वर शर्मा, स्वतंत्रता सेनानी उत्तराधिकारी मुरली मनोहर खंडेलवाल, छत्तीसगढ़ी भाषा छात्र संगठन के प्रमुख जीतेन्द्र कुमार साहू, खिलेश्वर चंद्रवंशी, प्रवीण , राजेंद्र आदित्य, देवेंद्र ,उद्योरम साहू, सहित बड़ी संख्या में छत्तीसगढ़ी प्रेमी उपस्थित रहे।

कनिष्का फाउंडेशन ने दिव्यांग बच्चों के साथ मनाया गरबा महोत्सव, खुशियों से खिल उठा घरौंदा आश्रम

रायपुर (जनता के गोठ) कनिष्का फाउंडेशन छत्तीसगढ़ द्वारा सुंदर नगर स्थित घरौंदा आश्रम में दिव्यांग बच्चों के साथ गरबा महोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस आयोजन में आश्रम की संस्थापिका श्रीमती मीना शर्मा एवं आश्रम के बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। गरबा की धुन पर बच्चों और संस्था की सदस्यों ने मिलकर नृत्य किया, जिससे पूरा वातावरण उत्साह और उमंग से भर गया।



इस आयोजन का उद्देश्य दिव्यांग बच्चों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ना, उनके साथ आत्मियता

बढ़ाना तथा उन्हें समान अवसर और सम्मान का अनुभव कराना था।

इस अवसर पर कनिष्का फाउंडेशन छत्तीसगढ़ की अध्यक्ष बडोले, लता लांजेवार, सारिका खुशबू शर्मा के साथ नीतू सिंह,

अन्नपूर्णा शर्मा, शुभांगी आटे, संध्या बडोले, लता लांजेवार, सारिका खुशबू शर्मा के साथ नीतू सिंह,

गुनगुन शर्मा, लाडो शर्मा सहित संस्था की अन्य सदस्य उपस्थित रहीं। सभी ने बच्चों के साथ गरबा कर आयोजन को यादगार बनाया। विशेष सहयोग मोहित पुजारी जी का रहा।

अध्यक्ष खुशबू शर्मा ने कहा कि कनिष्का फाउंडेशन का उद्देश्य सेवा, संवेदना और समर्पण के माध्यम से समाज के प्रत्येक वर्ग तक खुशियां पहुंचाना है। दिव्यांग बच्चे भी समाज का अभिन्न हिस्सा हैं। उनके साथ त्योहार मनाना और उनके चेहरों पर मुस्कान लाना संस्था के लिए बेहद खुशी और संतोष का विषय है। फाउंडेशन भविष्य में भी ऐसे सामाजिक एवं सेवाभावी आयोजन करता रहेगा।